अध्याय १८

महाप्रभु का समुद्र से बचाव

अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अठारहवें अध्याय का सांराश इस प्रकार दिया है। शरदऋतु में पूर्णमासी सन्ध्या में श्री चैतन्य महाप्रभु आइटोटा मन्दिर के पास समुद्र तट पर भ्रमण कर रहे थे। समुद्र को यमुना नदी समझकर वे कृष्ण तथा श्रीमती राधारानी तथा अन्य गोपियों की जललीला देखने के उद्देश्य से उसमें कूद पड़े। समुद्र में तैरते हुए वे कोणार्क मन्दिर तक बह गये, जहाँ एक मछुआरे ने उन्हें बड़ी मछली समझकर अपने जाल में पकड़ लिया और उन्हें समुद्र के तट पर ले आया। श्री चैतन्य महाप्रभु अचेत थे और उनका शरीर अत्यधिक परिवर्तित हो चुका था। उस मछुआरे ने ज्योंही महाप्रभु के शरीर का स्पर्श किया, त्योंही वह कृष्ण-प्रेम में उन्मत्त हो उठा। किन्तु उसे अपनी उन्मत्तता से भय लगा, क्योंकि उसने सोचा कि उसे कोई भूत-प्रेत लग गया है। जब वह भूत-प्रेत झाड़ने वाले को ढूँढ़ने जाने वाला था, तो उसे स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा अन्य भक्त समुद्र तट पर मिले, जो महाप्रभु की सर्वत्र खोज कर रहे थे। कुछ पूछताछ के बाद स्वरूप दामोदर समझ गये कि मछुआरे ने अपने जाल में श्री चैतन्य महाप्रभु को ही पकड़ा है। चूँकि मछुआरे को डर था कि उसे भूत-प्रेत सता रहा है, अतएव स्वरूप दामोदर ने उसको एक चपत लगाई और हरे कृष्ण का उच्चारण किया, जिससे वह तुरन्त शान्त हो गया। तत्पश्चात् जब भक्तों ने उच्च स्वर से हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन किया, तो श्री चैतन्य महाप्रभु की बाह्य चेतना जाग्रत हुई। तब वे उन्हें उनके घर ले आये।

शरज्ज्योत्स्ना-सिन्धोरवकलनया जात-यमुना-
भ्रमाद्धावन् योऽस्मिन्हरि-विरह-तापार्णव इव ।
निमग्नो मूर्च्छालः पयसि निवसन्नात्रिमखिलां
प्रभाते प्राप्तः स्वैरवतु स शची-सूनुरिह नः ॥ १ ॥

शरज्ज्योत्स्ना-सिन्धोरवकलनया जात-यमुना-
भ्रमाद्धावन् योऽस्मिन्हरि-विरह-तापार्णव इव ।
निमग्नो मूर्च्छालः पयसि निवसन्नात्रिमखिलां
प्रभाते प्राप्तः स्वैरवतु स शची-सूनुरिह नः ॥ १ ॥

शरत्-ज्योत्स्ना—शरद की चाँदनी में; **सिन्धोः**—समुद्र को; **अवकलनया**—देखकर; **जात**—लगा; **यमुना**—यमुना नदी; **भ्रमात्**—गलती से; **धावन्**—दौड़कर; **यः**—वे जो; **अस्मिन्**—इसमें; **हरि-विरह**—हरि के विरह के कारण; **ताप**—पीड़ा का; **अर्णवे**—समुद्र में; **इव**—जैसे; **निमग्नः**—कूद गये; **मूर्च्छालः**—अचेत; **पयसि**—जल में; **निवसन्**—रहकर; **रात्रिम्**—रात्रि; **अखिलाम्**—सारी; **प्रभाते**—प्रातःकाल; **प्राप्तः**—पाये गये; **स्वैः**—उनके निजी संगियों द्वारा; **अवतु**—रक्षा करें; **सः**—वे; **शची-सूनुः**—माता शची के पुत्र; **इह**—यहाँ; **नः**—हमारी।

अनुवाद

शरद की चाँदनी रात में समुद्र देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु को उसमें यमुना नदी का भ्रम हो गया। कृष्ण विरह से अत्यन्त पीड़ित होने के कारण वे दौड़कर समुद्र में कूद गये और सम्पूर्ण रात्रि जल में अचेतन पड़े रहे। प्रातःकाल उनके आत्मीय भक्तों ने उन्हें पाया। ऐसे शची माता के पुत्र श्री चैतन्य महाप्रभु अपनी दिव्य लीलाओं से हमारी रक्षा करें।

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २ ॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २ ॥

जय जय—जय जय; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु की; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैत आचार्य की जय हो! तथा श्री चैतन्य महाप्रभु के समस्त भक्तों की जय हो!

এই-মতে মহাপ্রভু নীলাচলে বৈসে ।
রাত্রি-দিনে কৃষ্ণ-বিচ্ছেদার্ণবে ভাসে ॥৩॥

এই-মতে মহাপ্রভু নীলাচলে বৈসে ।
রাত্রি-দিনে কৃষ্ণ-বিচ্ছেদার্ণবে ভাসে ॥ ৩ ॥

এই-মতে—इस प्रकार; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **নীলাচলে**—जगन्नाथ पुरी में; **বৈসে**—रहे; **রাত্রি-দিনে**—दिन-रात; **কৃষ্ণ-বিচ্ছেদ**—कृष्ण के विरह के; **অর্ণবে**—समुद्र में; **ভাসে**—तैरते रहे।

अनुवाद

इस तरह जगन्नाथपुरी में रहते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु रात-दिन कृष्ण के विरह रूपी समुद्र में तैरते रहे।

শরত্কালের রাত্রি, সব চন্দ্রিকা-উজ্জ্বল ।
প্রভু নিজ-গণ লঞা বেড়ান রাত্রি-সকল ॥৪॥

শরত্কালের রাত্রি, সব চন্দ্রিকা-উজ্জ্বল ।
প্রভু নিজ-গণ লঞা বেড়ান রাত্রি-সকল ॥ ৪ ॥

শরত্-কালের—शरद की; **রাত্রি**—रात; **সব**—सारी; **চন্দ্রিকা-উজ্জ্বল**—चाँदनी से प्रकाशमान; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **নিজ-গণ**—अपने पार्षदों को; **লঞা**—साथ लेकर; **বেড়ান**—चले; **রাত্রি-সকল**—सारी रात।

अनुवाद

शरद ऋतु की रात में जब पूर्ण चन्द्रमा हर वस्तु को प्रकाशमान कर रहा था, तब श्री चैतन्य महाप्रभु अपने भक्तों के साथ रात भर भ्रमण करते रहे।

উদ্যানে উদ্যানে ভ্রমেন কৌতুক দেখিতে ।
রাস-লীলার গীত-শ্লোক পড়িতে শুনিতে ॥৫॥

उद्याने उद्याने भ्रमेन कौतुक देखिते ।
रास-लीलार गीत-श्लोक पड़िते शुनिते ॥५॥

उद्याने उद्याने—एक उद्यान से दूसरे उद्यान में; **भ्रमेन**—वे भ्रमण करते रहे; **कौतुक देखिते**—देखते हुए; **रास-लीलार**—रास नृत्य के; **गीत-श्लोक**—गीत तथा श्लोक; **पड़िते शुनिते**—पढ़ते तथा सुनते हुए।

अनुवाद

वे भगवान् कृष्ण की लीलाएँ देखते तथा रासलीला विषयक गीतों तथा श्लोकों को सुनते-सुनाते एक बगीचे से दूसरे बगीचे में भ्रमण करते रहे।

প্রভু প্রেমাবেশে করেন গান, নর্তন ।
কভু ভাবাবেশে রাস-লীলানুকরণ ॥৬॥

प्रभु प्रेमावेशे करेन गान, नर्तन ।
कभु भावावेशे रास-लीलानुकरण ॥६॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **करेन**—किया; **गान**—गायन; **नर्तन**—नृत्य; **कभु**—कभी-कभी; **भाव-आवेशे**—भावावेश में; **रास-लीला**—रासलीला का नृत्य; **अनुकरण**—का अनुकरण करके।

अनुवाद

वे प्रेमावेश में नाचते गाते रहे और कभी-कभी भावावेश में रासनृत्य का अनुकरण करते रहे।

কভু ভাবোন্মাদে প্রভু ইতি-উতি ধায় ।
ভূমে পড়ি' কভু মূর্চ্ছা, কভু গড়ি' যায় ॥৭॥

कभु भावोन्मादे प्रभु इति-उति धाय ।
भूमे पड़ि' कभु मूर्च्छा, कभु गड़ि' याय ॥७॥

कभु—कभी; **भाव-उन्मादे**—प्रेमावेश के उन्माद में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **इति-उति**—इधर-उधर; **धाय**—दौड़ते; **भूमे पड़ि'**—भूमि पर गिरते; **कभु मूर्च्छा**—कभी अचेत होते; **कभु**—कभी; **गड़ि' याय**—भूमि पर लुढ़कते।

अनुवाद

वे भावोन्माद में कभी इधर-उधर दौड़ते और कभी भूमि पर गिरकर लुढ़कने लगते। कभी वे पूर्णतया अचेत हो जाते।

রাস-লীলার এক শ্লোক যবে পড়ে, শুনে ।
পূর্ববত্তবে অর্থ করেন আপনে ॥৮॥

रास-लीलार एक श्लोक ग्रबे पड़े, शुने ।
पूर्ववत्तबे अर्थ करेन आपने ॥८॥

रास-लीलार—रासलीला का; **एक**—एक; **श्लोक**—श्लोक; **ग्रबे**—जब; **पड़े**—पढ़ते; **शुने**—सुनते; **पूर्व-वत्**—पहले की तरह; **तबे**—तब; **अर्थ करेन**—व्याख्या करते; **आपने**—स्वयं।

अनुवाद

जब वे स्वरूप दामोदर को रासलीला से सम्बन्धित कोई श्लोक पढ़ते सुनते या स्वयं कोई श्लोक सुनाते, तब वे स्वयं उसकी व्याख्या करते, जैसाकि वे पहले कर चुके थे।

এই-মত রাস-লীলায় হয় যত শ্লোক ।
সবার অর্থ করে, পায় কভু হর্ষ-শোক ॥৯॥

एइ-मत रास-लीलाय हय ग्रत श्लोक ।
सबार अर्थ करे, पाय कभु हर्ष-शोक ॥९॥

एइ-मत—इस तरह; **रास-लीलाय**—रासलीला में; **हय**—हैं; **ग्रत श्लोक**—जितने श्लोक; **सबार**—उन सबका; **अर्थ करे**—उन्होंने अर्थ बतलाया; **पाय**—पाया; **कभु**—कभी-कभी; **हर्ष-शोक**—हर्ष तथा शोक।

अनुवाद

इस तरह उन्होंने रासलीला से सम्बन्धित सारे श्लोकों का अर्थ बतलाया। कभी-कभी वे अत्यन्त खिन्न हो जाते, तो कभी अत्यन्त हर्षित हो जाते।

সে সব শ্লোকের অর্থ, সে সব 'বিকার' ।
সে সব বর্ণিতে গ্রন্থ হয় অতি-বিস্তার ॥ ১০॥

সে সব শ্লোকের অর্থ, সে সব 'বিকার' ।
সে সব বর্ণিতে গ্রন্থ হয় অতি-বিস্তার ॥ ১০॥

সে সব—উন সব; **শ্লোকের**—শ্লোকों का; **অর্থ**—अर्थ; **সে**—उन; **সব**—सब; **বিকার**—विकार; **সে সব**—उन सब; **বর্ণিতে**—वर्णन करने के लिए; **গ্রন্থ হয়**—ग्रन्थ हो जायेगा; **অতি-বিস্তার**—बहुत बड़ा।

अनुवाद

उन सारे श्लोकों की तथा महाप्रभु के शरीर में हुए समस्त विकारों की पूर्ण व्याख्या करने के लिए बहुत बड़े ग्रन्थ की आवश्यकता होगी।

দ্বাদশ বত্সরে যে যে লীলা ক্ষণে-ক্ষণে ।
অতি-বাহুল্য-ভয়ে গ্রন্থ না কৈলুঁ লিখনে ॥ ১১॥

দ্বাদশ বত্সরে যে যে লীলা ক্ষণে-ক্ষণে ।
অতি-বাহুল্য-ভয়ে গ্রন্থ না কৈলুঁ লিখনে ॥ ১১॥

দ্বাদশ বত্সরে—बारह वर्षों में; **যে যে**—जो भी; **লীলা**—लीलाएँ; **ক্ষণে-ক্ষণে**—प्रतिक्षण; **অতি-বাহুল্য**—अत्यन्त विस्तृत; **ভয়ে**—के डर से; **গ্রন্থ**—ग्रन्थ; **না**—नहीं; **কৈলুঁ লিখনে**—मैंने लिखा है।

अनुवाद

कहीं इस ग्रन्थ का आकार न बढ़ जाय, इस भय से मैंने महाप्रभु की सारी लीलाओं के विषय में नहीं लिखा, क्योंकि वे बारह वर्षों तक प्रतिदिन प्रति क्षण इन लीलाओं को सम्पन्न करते रहे।

পূর্বে যেই দেখাঞাছি দিগ্দরশন ।
তৈছে জানিহ 'বিকার' 'প্রলাপ' বর্ণন ॥ ১২॥

পূর্বে যেই দেখাঞাছি দিগ্দরশন ।
তৈছে জানিহ 'বিকার' 'প্রলাপ' বর্ণন ॥ ১২॥

পূর্বে—पहले; **যেই**—जैसे; **দেখাঞাছি**—मैंने इंगित किया है; **দিক্-দরশন**—केवल

संकेत; **तैछे**—इसी प्रकार; **जानिह**—आप जानिये; **विकार**—विकार; **प्रलाप**—प्रलाप; **वर्णन**—वर्णन।

अनुवाद

जैसा मैं पहले इंगित कर चुका हूँ, मैं महाप्रभु के प्रलापों तथा शारीरिक विकारों का संक्षिप्त वर्णन ही कर रहा हूँ।

सहस्र-वदने यबे कहये 'अनन्त' ।
एक-दिनेर लीलार तबु नाहि पाय अन्त ॥ १३॥

सहस्र-वदने य्रबे कहये 'अनन्त' ।
एक-दिनेर लीलार तबु नाहि पाय अन्त ॥ १३॥

सहस्र-वदने—हजारो मुखों से; **य्रबे**—जब; **कहये**—कहेंगे; **अनन्त**—अनन्त देव; **एक-दिनेर**—एक दिन की; **लीलार**—लीलाएँ; **तबु**—फिर भी; **नाहि**—नहीं; **पाय**—पायेंगे; **अन्त**—अन्त।

अनुवाद

यदि अपने एक हजार फनों से अनन्त देव श्री चैतन्य महाप्रभु की एक दिन की ही लीलाओं का वर्णन करना चाहें, तो उनके लिए इनका पूरी तरह से वर्णन कर पाना असम्भव होगा।

कोटि-युग पर्यन्त यदि लिखये गणेश ।
एक-दिनेर लीलार तबु नाहि पाय शेष ॥ १४॥

कोटि-य्रुग पर्य्रन्त य्रदि लिखये गणेश ।
एक-दिनेर लीलार तबु नाहि पाय शेष ॥ १४॥

कोटि-य्रुग—करोड़ों युग; **पर्य्रन्त**—तक; **य्रदि**—यदि; **लिखये**—लिखेंगे; **गणेश**—गणेश देव (शिवजी के पुत्र); **एक-दिनेर**—एक दिन की; **लीलार**—लीलाएँ; **तबु**—फिर भी; **नाहि पाय**—नहीं पायेंगे; **शेष**—सीमा।

अनुवाद

यदि शिव के पुत्र तथा देवताओं के पटु लिपिक गणेश जी, महाप्रभु की एक दिन की लीलाओं का पूरी तरह से वर्णन करने का प्रयास करोड़ों युगों तक करें, तो भी वे उनकी सीमा नहीं पा सकेंगे।

ভক্তের প্রেম-বিকার দেখি' কৃষ্ণের চমত্কার! ।
কৃষ্ণ যার না পায় অন্ত, কেবা ছার আর? ॥ ১৫ ॥

भक्तेर प्रेम-विकार देखि' कृष्णेर चमत्कार! ।
कृष्ण याार ना पाय अन्त, केबा छार आर? ॥ १५ ॥

भक्तेर—भक्त के; **प्रेम-विकार**—भाव के विकारों को; **देखि'**—देखकर; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण का; **चमत्कार**—आश्चर्य; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **याार**—जिसका; **ना पाय**—नहीं पाते; **अन्त**—अन्त; **केबा**—जो; **छार**—नगण्य; **आर**—अन्य।

अनुवाद

भगवान् कृष्ण तक अपने भक्तों के भाव विकारों को देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं। यदि स्वयं कृष्ण ऐसे भावों की सीमाओं का अनुमान नहीं लगा सकते, तो अन्य लोग कैसे लगा सकेंगे?

ভক্ত-প্রেমার যত দশা, যে গতি প্রকার ।
যত দুঃখ, যত সুখ, যতেক বিকার ॥ ১৬ ॥
কৃষ্ণ তাহা সম্যক্না পারে জানিতে ।
ভক্ত-ভাব অঙ্গীকরে তাহা আস্বাদিতে ॥ ১৭ ॥

भक्त-प्रेमार याय दशा, याे गति प्रकार ।
याय दुःख, याय सुख, यातेक विकार ॥ १६ ॥
कृष्ण ताहा सम्यक् ना पारे जानिते ।
भक्त-भाव अङ्गीकरे ताहा आस्वादिते ॥ १७ ॥

भक्त-प्रेमार—भक्त का प्रेमावेश; **याय**—सब; **दशा**—दशा; **याे**—जो; **गति प्रकार**—प्रगति की रीति; **याय**—राब; **दुःख**—दुःख; **याय**—सब; **सुख**—सुख; **यातेक**—सब; **विकार**—विकार; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **ताहा**—वह; **सम्यक्**—पूर्णतया; **ना पारे जानिते**—नहीं समझ सकते; **भक्त-भाव**—भक्त का भाव; **अङ्गीकरे**—वे स्वीकार करते हैं; **ताहा**—वह; **आस्वादिते**—आस्वादन करने के लिए।

अनुवाद

स्वयं कृष्ण भी अपने भक्तों की दशा, प्रगति, सुख तथा दुःख एवं प्रेमभावों को पूरी तरह नहीं समझ पाते। इसलिए वे इन भावों का पूर्ण आस्वादन करने हेतु भक्त की भूमिका अंगीकार करते हैं।

কৃষ্ণেরে নাচায় প্রেমা, ভক্তেরে নাচায় ।
আপনে নাচয়ে,—তিনে নাচে এক-ঠাঞি ॥ ১৮॥

কৃষ্ণেরে নাচায় প্রেমা, ভক্তেরে নাচায় ।
আপনে নাচয়ে,—তিনে নাচে এক-ঠাঞি ॥ ১৮॥

कृष्णेरे नाचाय प्रेमा, भक्तेरे नाचाय ।
आपने नाचये,—तिने नाचे एक-ठाञि ॥ १८॥

कृष्णेरे—कृष्ण; **नाचाय**—नचाता है; **प्रेमा**—कृष्ण-प्रेम; **भक्तेरे**—भक्त; **नाचाय**—नचाता है; **आपने**—स्वयं; **नाचये**—नाचता है; **तिने**—तीनों; **नाचे**—नाचते हैं; **एक-ठाञि**—एक स्थान पर।

अनुवाद

कृष्ण का प्रेम कृष्ण तथा उनके भक्तों को नचाता है और स्वयं भी नाचता है। इस तरह तीनों ही एक साथ एक स्थान में नाचते हैं।

প্রেমার বিকার বর্ণিতে চাহে যেই জন ।
চান্দ ধরিতে চাহে, যেন হঞা 'বামন' ॥ ১৯॥

প্রেমার বিকার বর্ণিতে চাহে যেই জন ।
চান্দ ধরিতে চাহে, যেন হঞা 'বামন' ॥ ১৯॥

प्रेमार विकार वर्णिते चाहे येइ जन ।
चान्द धरिते चाहे, येन हञा 'वामन' ॥ १९॥

प्रेमार—कृष्ण का प्रेम; **विकार**—विकार; **वर्णिते**—वर्णन करने के लिए; **चाहे**—चाहता है; **येइ जन**—जो व्यक्ति; **चान्द धरिते**—चन्द्रमा को पकड़ने के लिए; **चाहे**—वह चाहता है; **येन**—जैसे; **हञा**—होकर; **वामन**—बौना।

अनुवाद

जो व्यक्ति कृष्ण के प्रेम-विकारों का वर्णन करना चाहता है, वह उस बौने के समान है, जो आकाश में स्थित चन्द्रमा को पकड़ने का प्रयास करता है।

বায়ু যৈছে সিন্ধু-জলের হরে এক 'কণ' ।
কৃষ্ণ-প্রেম-কণ তৈছে জীবের স্পর্শন ॥ ২০॥

বায়ু যৈছে সিন্ধু-জলের হরে এক 'কণ' ।
কৃষ্ণ-প্রেম-কণ তৈছে জীবের স্পর্শন ॥ ২০॥

वायु यैछे सिन्धु-जलेर हरे एक 'कण' ।
कृष्ण-प्रेम-कण तैछे जीवेर स्पर्शन ॥ २०॥

वायु—वायु; **यैछे**—जैसे; **सिन्धु-जलेर**—समुद्र के जल का; **हरे**—ले जाता है; **एक**

कण—एक कण; **कृष्ण-प्रेम-कण**—कृष्ण-प्रेम का एक कण; **तैछे**—उसी तरह; **जीवेर स्पर्शन**—जीव स्पर्श कर सकता है।

अनुवाद

जिस तरह वायु समुद्र के जल की एक बूँद को ही उड़ा ले जा सकती है, उसी तरह जीव कृष्ण के प्रेम रूपी सागर के केवल एक कण का ही स्पर्श कर सकता है।

ক্ষণে ক্ষণে উঠে প্রেমার তরঙ্গ অনন্ত ।
জীব ছার কাহাঁ তার পাইবেক অন্ত? ॥২১॥

क्षणे क्षणे उठे प्रेमार तरङ्ग अनन्त ।
जीव छार काहाँ तार पाइबेक अन्त? ॥ २१ ॥

क्षणे क्षणे—क्षण प्रति क्षण; **उठे**—उठती हैं; **प्रेमार**—कृष्ण-प्रेम की; **तरङ्ग**—लहरें; **अनन्त**—अनन्त; **जीव**—जीव; **छार**—तुच्छ; **काहाँ**—कहाँ; **तार**—उसकी; **पाइबेक**—पायेगा; **अन्त**—सीमा।

अनुवाद

प्रेम के उस सागर में क्षण प्रति क्षण अनन्त लहरें उठती हैं। भला एक तुच्छ जीव किस तरह उनकी सीमाओं का अनुमान लगा सकता है?

শ্রী-কৃষ্ণ-চৈতন্য যাহা করেন আস্বাদন ।
সবে এক জানে তাহা স্বরূপাদি 'গণ' ॥২২॥

श्री-कृष्ण-चैतन्य याहा करेन आस्वादन ।
सबे एक जाने ताहा स्वरूपादि 'गण' ॥ २२ ॥

श्री-कृष्ण-चैतन्य—श्री चैतन्य महाप्रभु; **याहा**—जो भी; **करेन**—करते हैं; **आस्वादन**—आस्वादन; **सबे**—पूर्णतया; **एक**—एक; **जाने**—जानते हैं; **ताहा**—वह; **स्वरूप-आदि गण**—स्वरूप दामोदर जैसे भक्त।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर गोस्वामी जैसे व्यक्ति ही पूरी तरह जान सकते हैं कि श्री चैतन्य महाप्रभु अपने कृष्ण-प्रेम में क्या आस्वादन करते हैं।

জীব হঞা করে যেই তাহার বর্ণন ।
আপনা শোধিতে তার ছোঁয়ে এক 'কণ' ॥২৩॥

জীব হঞা করে য়েই তাহার বর্ণন ।
আপনা শোধিতে তার ছোঁয়ে এক 'কণ' ॥ ২৩॥

জীব হঞা—सामान्य जीव होने से; **করে**—करता है; **য়েই**—जो भी; **তাহার**—उसका; **বর্ণন**—वर्णन; **আপনা**—स्वयं को; **শোধিতে**—शुद्ध करने के लिए; **তার**—उसका; **ছোঁয়ে**—स्पर्श करता है; **এক কণ**—एक कण।

अनुवाद

जब कोई सामान्य जीव श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का वर्णन करता है, तब वह स्वयं उस महासागर की एक बूँद का स्पर्श करके अपने आपको पवित्र बनाता है।

এই-মত রাসের শ্লোক-সকল-ই পড়িলা ।
শেষে জল-কেলির শ্লোক পড়িতে লাগিলা ॥২৪॥

এই-মত রাসের শ্লোক-সকল-ই পড়িলা ।
শেষে জল-কেলির শ্লোক পড়িতে লাগিলা ॥ ২৪॥

এই-মত—इस प्रकार; **রাসের**—रास नृत्य के; **শ্লোক**—श्लोक; **সকল-ই**—सब; **পড়িলা**—पढ़े गये; **শেষে**—अन्त में; **জল-কেলির**—जलक्रीड़ा की लीला का; **শ্লোক**—श्लोक; **পড়িতে লাগিলা**—सुनाने लगे।

अनुवाद

इस तरह रासलीला विषयक सारे के सारे श्लोक सुनाये गये। तब अन्त में जल-क्रीड़ा विषयक लीला का श्लोक सुनाया गया।

তাভির্যুতঃ শ্রমমপোহিতুমঙ্গ-সঙ্গ-
ঘৃষ্ট-স্রজঃ স কুচ-কুঙ্কুম-রঞ্জিতায়াঃ ।
গন্ধর্ব-পালিভিরনুদ্রুত আবিশদ্বাঃ
শ্রান্তো গজীভিরিভ-রাড্ ইব ভিন্ন-সেতুঃ ॥২৫॥

তাভির্যুতঃ শ্রমমপোহিতুমঙ্গ-সঙ্গ-
ঘৃষ্ট-স্রজঃ স কুচ-কুঙ্কুম-রঞ্জিতায়াঃ ।

गन्धर्व-पालिभिरनुद्रुत आविशद्वाः
श्रान्तो गजीभिरिभ-राड् इव भिन्न-सेतुः ॥ २५ ॥

ताभिः—उनके (गोपियों के); **युतः**—साथ; **श्रमम्**—थकान; **अपोहितुम्**—दूर करने के लिए; **अङ्ग-सङ्ग**—देह के स्पर्श से; **घृष्ट**—मर्दित; **स्रजः**—फूलों की माला से; **सः**—वे; **कुच-कुङ्कुम**—उरोजों पर लगे कुंकुम से; **रञ्जितायाः**—रंजित; **गन्धर्व-प**—गन्धर्व लोक के दैवी जीवों जैसे; **अलिभिः**—भौंरों द्वारा; **अनुद्रुतः**—पीछा किये जाने वाले; **आविशत्**—प्रवेश किया; **वाः**—जल में; **श्रान्तः**—थके हुए; **गजीभिः**—हाथिनियों द्वारा; **इभ**—हाथी के; **राट्**—राजा; **इव**—समान; **भिन्न-सेतुः**—वेदों के नैतिकता के सिद्धान्तों से परे।

अनुवाद

"जिस तरह हाथियों का स्वतन्त्र प्रमुख अपनी हथिनियों के साथ जल में प्रवेश करता है, उसी तरह वैदिक नैतिकता के सिद्धान्तों से परे कृष्ण ने गोपियों समेत यमुना में प्रवेश किया। उनका वक्षस्थल गोपियों के उरोजों के संपर्क में आने के कारण उनके गले की माला मर्दित हो गई थी और वह लाल कुंकुम चूर्ण से रँग गई थी। उस माला की सुगन्ध से आकृष्ट होकर भौंरे कृष्ण का पीछा करने लगे मानों गन्धर्व लोक के दैवी जीव हों। इस तरह भगवान् कृष्ण ने रासलीला की थकान को दूर किया।"

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.३३.२२) से है।

एई-मत महाप्रभु भ्रमिते भ्रमिते ।
आइटोटा हैते समुद्र देखेन आचम्बिते ॥ २६ ॥

एइ-मत महाप्रभु भ्रमिते भ्रमिते ।
आइटोटा हैते समुद्र देखेन आचम्बिते ॥ २६ ॥

एइ-मत—इस तरह; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भ्रमिते भ्रमिते**—भ्रमण करते हुए; **आइटोटा हैते**—आइटोटा के मन्दिर से; **समुद्र**—समुद्र; **देखेन**—देखा; **आचम्बिते**—अचानक।

अनुवाद

इस तरह आइटोटा मन्दिर के निकट भ्रमण करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु ने सहसा समुद्र देखा।

চন্দ্র-কান্ত্যে উছলিত তরঙ্গ উজ্জ্বল ।
ঝলমল করে,—যেন 'যমুনার জল' ॥২৭॥

चन्द्र-कान्त्ये उछलित तरङ्ग उज्ज्वल ।
झलमल करे,—य्रेन 'य्रमुनार जल' ॥ २७॥

चन्द्र-कान्त्ये—चन्द्रमा की चमकती किरणों से; **उछलित**—ऊँची ऊँची; **तरङ्ग**—लहरें; **उज्ज्वल**—उज्ज्वल; **झलमल करे**—चमकती; **य्रेन**—जैसे; **य्रमुनार जल**—यमुना नदी का जल।

अनुवाद

चन्द्रमा के उज्ज्वल प्रकाश से चमकती समुद्र की ऊँची-ऊँची लहरें यमुना नदी के जल जैसी झलमल कर रही थीं।

যমুনার ভ্রমে প্রভু ধাঞা চলিলা ।
অলক্ষিতে যাই' সিন্ধু-জলে ঝাঁপ দিলা ॥২৮॥

य्रमुनार भ्रमे प्रभु धाञा चलिला ।
अलक्षिते य्राइ' सिन्धु-जले झाँप दिला ॥ २८॥

य्रमुनार भ्रमे—गलती से यमुना समझकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **धाञा चलिला**—तेजी से दौड़ने लगे; **अलक्षिते**—दिखे बिना; **य्राइ'**—जाकर; **सिन्धु-जले**—समुद्र के जल में; **झाँप दिला**—वे कूद पड़े।

अनुवाद

समुद्र को यमुना नदी समझकर महाप्रभु तेजी से दौड़े और अन्यों के देखे बिना जल में कूद पड़े।

পড়িতেই হৈল মূর্চ্ছা, কিছুই না জানে ।
কভু ডুবায়, কভু ভাসায় তরঙ্গের গণে ॥২৯॥

पड़ितेइ हैल मूर्च्छा, किछुइ ना जाने ।
कभु डुबाय, कभु भासाय तरङ्गेर गणे ॥ २९॥

पड़ितेइ—गिरकर; **हैल मूर्च्छा**—वे अचेत हो गये; **किछुइ**—कुछ भी; **ना जाने**—समझ नहीं सके; **कभु**—कभी-कभी; **डुबाय**—डूब जाते; **कभु**—कभी-कभी; **भासाय**—तैरते; **तरङ्गेर गणे**—तरंगों में।

अनुवाद

समुद्र में गिरते ही उनकी चेतना चली गई और वे यह न समझ सके कि वे कहाँ हैं। वे कभी लहरों के नीचे डूब जाते और कभी उनके ऊपर तैरते रहते।

তরঙ্গে বহিয়া ফিরে,——যেন শুষ্ক কাষ্ঠ ।
কে বুঝিতে পারে এই চৈতন্যের নাট? ॥৩০॥

तरङ्गे वहिया फिरे,——ग्रेन शुष्क काष्ठ ।
के बुझिते पारे एइ चैतन्येर नाट? ॥ ३० ॥

तरङ्गे—लहरें; **वहिया फिरे**—इधर-उधर ले जाती; **ग्रेन**—जैसे; **शुष्क काष्ठ**—सूखे काष्ठ का टुकडा; **के**—कौन; **बुझिते पारे**—समझ सकता है; **एइ**—यह; **चैतन्येर नाट**—श्री चैतन्य महाप्रभु का नाटकीय प्रदर्शन।

अनुवाद

लहरें उन्हें इधर-उधर बहा ले गईं मानो कोई सुखे काठ का लट्ठा हो। श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा किये जाने वाले इस नाटकीय प्रदर्शन को कौन समझ सकता है?

কোণার্কের দিকে প্রভুরে তরঙ্গে লঞা যায় ।
কভু ডুবাঞা রাখে, কভু ভাসাঞা লঞা যায় ॥৩১॥

कोणार्केर दिके प्रभुरे तरङ्गे लञा ग्राय ।
कभु डुबाञा राखे, कभु भासाञा लञा ग्राय ॥ ३१ ॥

कोणार्केर दिके—कोणार्क मन्दिर की ओर; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तरङ्गे**—लहरें; **लञा ग्राय**—ले गईं; **कभु**—कभी-कभी; **डुबाञा**—डूबो देतीं; **राखे**—रखतीं; **कभु**—कभी-कभी; **भासाञा**—तैराये रखतीं; **लञा ग्राय**—ले जातीं।

अनुवाद

लहरें कभी महाप्रभु को डुबो देतीं और कभी ऊपर तैराये रखतीं। इस तरह वे उन्हें कोणार्क मन्दिर की ओर बहा ले गईं।

तात्पर्य

कोणार्क सामन्यतया अर्कतीर्थ कहलाता है और यह सूर्यदेव का मन्दिर है।

यह जगन्नाथपुरी से १९ मील उत्तर की ओर समुद्रतट पर स्थित है। इसका निर्माण काले पत्थरों से शक सम्वत् की तेरहवीं सदी के प्रारम्भ में हुआ था और वह शिल्पकला तथा वास्तुकला का उत्तम नमूना है।

यमुनाते जल-केलि गोपी-गण-सङ्गे ।
कृष्ण करेन——महाप्रभु मग्न सेइ रङ्गे ॥३२॥

यमुनाते जल-केलि गोपी-गण-सङ्गे ।
कृष्ण करेन——महाप्रभु मग्न सेइ रङ्गे ॥ ३२ ॥

यमुनाते—यमुना नदी में; **जल-केलि**—जलक्रीडा; **गोपी-गण-सङ्गे**—गोपियों के साथ; **कृष्ण करेन**—कृष्ण ने की थीं; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **मग्न**—पूर्णतया निमग्न; **सेइ रङ्गे**—उन लीलाओं में।

अनुवाद

भगवान् कृष्ण ने गोपियों के साथ यमुना के जल में जो लीलाएँ की थीं, श्री चैतन्य महाप्रभु उन्हीं लीलाओं में पूरी तरह निमग्न थे।

इहाँ स्वरूपादि-गण प्रभु ना देखिया ।
'काहाँ गेला प्रभु?' कहे चमकित हञा ॥३३॥

इहाँ स्वरूपादि-गण प्रभु ना देखिया ।
'काहाँ गेला प्रभु?' कहे चमकित हञा ॥ ३३ ॥

इहाँ—यहाँ; **स्वरूप-आदि-गण**—स्वरूप दामोदर आदि भक्तगण; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ना देखिया**—न देखकर; **काहाँ**—कहाँ; **गेला**—चले गये; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कहे**—कहा; **चमकित हञा**—चकित होकर।

अनुवाद

इस बीच स्वरूप दामोदर इत्यादि सारे भक्तों ने जब श्री चैतन्य महाप्रभु को नहीं देखा, तो वे सभी चकित होकर यह पूछते हुए उनको खोजने लगे कि, "महाप्रभु कहाँ चले गये?"

मनो-वेगे गेला प्रभु, देखिते नारिला ।
प्रभुरे ना देखिया संशय करिते लागिला ॥३४॥

मनो-वेगे गेला प्रभु, देखिते नारिला ।
प्रभुरे ना देखिया संशय करिते लागिला ॥ ३४॥

मनः-वेगे—मन के वेग से; **गेला**—गये; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **देखिते नारिला**—कोई देख नहीं सका; **प्रभुरे**—महाप्रभु; **ना देखिया**—न देखकर; **संशय**—संशय; **करिते लागिला**—होने लगा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु मन के वेग से भागे थे। कोई उन्हें नहीं देख सका। अतः वे कहाँ थे उसके विषय में सारे लोग संशय में थे।

'জগন্নাথ দেখিতে কিবা দেবালয়ে গেলা? ।
অন্য উদ্যানে কিবা উন্মাদে পড়িলা? ॥৩৫॥

'जगन्नाथ देखिते किबा देवालये गेला? ।
अन्य उद्याने किबा उन्मादे पड़िला? ॥ ३५॥

जगन्नाथ—भगवान् जगन्नाथ; **देखिते**—दर्शन करने; **किबा**—या; **देवालये**—मन्दिर में; **गेला**—गये; **अन्य**—अन्य; **उद्याने**—उद्यान में; **किबा**—या; **उन्मादे**—उन्मत्तता में; **पड़िला**—गिर गये।

अनुवाद

"क्या महाप्रभु जगन्नाथजी के मन्दिर गये हैं या वे उन्मत्ततावश किसी उद्यान में गिर पड़े हैं?

গুণ্ডিচা-মন্দিরে গেলা, কিবা নরেন্দ্রেরে? ।
চটক-পর্বতে গেলা, কিবা কোণার্কেরে?' ॥৩৬॥

गुण्डिचा-मन्दिरे गेला, किबा नरेन्द्रेरे? ।
चटक-पर्वते गेला, किबा कोणार्केरे?' ॥ ३६॥

गुण्डिचा-मन्दिरे—गुण्डिचा मन्दिर को; **गेला**—गये हैं; **किबा**—अथवा; **नरेन्द्रेरे**—नरेन्द्र सरोवर को; **चटक-पर्वते**—चटक पर्वत को; **गेला**—गये हैं; **किबा**—अथवा; **कोणार्केरे**—कोणार्क मन्दिर में।

अनुवाद

"हो सकता है कि वे गुण्डिचा मन्दिर गये हैं या नरेन्द्र सरोवर अथवा चटक पर्वत गये हैं। हो सकता है कि वे कोणार्क के मन्दिर में गये हों।"

এত বলি' সবে ফিরে প্রভুরে চাহিয়া ।
সমুদ্রের তীরে আইলা কত জন লঞা ॥ ৩৭ ॥

এত বলি' সবে ফিরে প্রভুরে চাহিয়া ।
সমুদ্রের তীরে আইলা কত জন লঞা ॥ ৩৭ ॥

এত বলি'—यह कहकर; **सबे**—वे सब; **फिरे**—घूमते हुए; **प्रभुरे चाहिया**—श्री चैतन्य महाप्रभु को खोजते हुए; **समुद्रेर तीरे**—समुद्र तट पर; **आइला**—आ पहुँचे; **कत**—अनेक; **जन**—लोग; **लञा**—के साथ।

अनुवाद

इस तरह बातें करते हुए भक्त जन महाप्रभु को खोजने के लिए इधर-उधर घूमने लगे। अन्त में वे अन्य अनेक लोगों समेत समुद्र के किनारे आये।

চাহিয়ে বেড়াইতে ঐছে রাত্রি-শেষ হৈল ।
'অন্তর্ধান হ-ইলা প্রভু',—নিশ্চয় করিল ॥ ৩৮ ॥

চাহিয়ে বেড়াইতে ঐছে রাত্রি-শেষ হৈল ।
'অন্তর্ধান হ-ইলা প্রভু',—নিশ্চয় করিল ॥ ৩৮ ॥

চাহিয়ে—खोजते हुए; **बेड़ाइते**—घूमते हुए; **ऐछे**—इस तरह; **रात्रि-शेष हैल**—रात्रि बीत गई; **अन्तर्धान ह-इला**—अन्तर्धान हो गये हैं; **प्रभु**—महाप्रभु; **निश्चय करिल**—उन्होंने निश्चय किया।

अनुवाद

इस तरह महाप्रभु की खोज करते हुए रात बीत गई। अतः उन्होंने निश्चय किया, "अब श्री चैतन्य महाप्रभु अन्तर्धान हो गये हैं।"

প্রভুর বিচ্ছেদে কার দেহে নাহি প্রাণ ।
অনিষ্টা-শঙ্কা বিনা কার মনে নাহি আন ॥ ৩৯ ॥

প্রভুর বিচ্ছেদে কার দেহে নাহি প্রাণ ।
অনিষ্টা-শঙ্কা বিনা কার মনে নাহি আন ॥ ৩৯ ॥

प्रभुर—महाप्रभु से; **विच्छेदे**—वियोग के कारण; **कार**—वे सब; **देहे**—शरीर में; **नाहि प्राण**—बिना प्राण के; **अनिष्टा-शङ्का**—किसी दुर्घटना की आशंका में; **विना**—बिना; **कार**—वे सब; **मने**—मन में; **नाहे आन**—अन्य कुछ भी।

अनुवाद

महाप्रभु के वियोग में सबों को ऐसा लग रहा था मानो उनके प्राण निकल चुके हों। सभी भक्तों ने यह निष्कर्ष निकाला कि अवश्य ही कोई दुर्घटना घटी है। इसके अतिरिक्त वे और कुछ नहीं सोच पाये।

''अनिष्ट-शङ्कीनि बन्धु-हृदयानि भवन्ति हि'' ॥ ४०॥

"अनिष्ट-शङ्कीनि बन्धु-हृदयानि भवन्ति हि" ॥ ४०॥

अनिष्ट—किसी अनिष्ट का; **शङ्कीनि**—शंकाशील; **बन्धु**—मित्र या सम्बन्धी के प्रति; **हृदयानि**—हृदय; **भवन्ति**—होता है; **हि**—निश्चय ही।

अनुवाद

"कोई सम्बन्धी या घनिष्ठ मित्र अपने प्रिय के अनिष्ट के प्रति सदैव भयभीत रहता है।"

तात्पर्य

यह उद्धरण *अभिज्ञान शाकुन्तला नाटक* से है।

समुद्रेर तीरे आसि' युकति करिला ।
चिरायु-पर्वत-दिके कत-जन गेला ॥ ४१॥

समुद्रेर तीरे आसि' युकति करिला ।
चिरायु-पर्वत-दिके कत-जन गेला ॥ ४१॥

समुद्रेर तीरे—समुद्र के तट पर; **आसि'**—आकर; **युकति करिला**—उन्होंने विचार-विमर्श किया; **चिरायु-पर्वत**—चटक पर्वत की; **दिके**—दिशा में; **कत-जन**—उनमें से कुछ; **गेला**—गये।

अनुवाद

जब वे समुद्र के किनारे आये, तो उन्होंने परस्पर विचार-विमर्श किया। तब उनमें से कुछ लोग श्री चैतन्य महाप्रभु को ढूँढ़ने चटक पर्वत गये।

पूर्व-दिशाय चले स्वरूप लञा कत जन ।
सिन्धु-तीरे-नीरे करेन प्रभुर अन्वेषण ॥ ४२॥

पूर्व-दिशाय चले स्वरूप लञा कत जन ।
सिन्धु-तीरे-नीरे करेन प्रभुर अन्वेषण ॥ ४२ ॥

पूर्व-दिशाय—पूर्व दिशा में; **चले**—गये; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **लञा**—लेकर; **कत जन**—कुछ लोग; **सिन्धु-तीरे**—समुद्र के तट पर; **नीरे**—जल में; **करेन**—की; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **अन्वेषण**—खोज।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर अन्यों के साथ महाप्रभु को समुद्र के किनारे अथवा जल में ढूँढते हुए पूर्व की ओर बढ़े।

বিষাদে বিহ্বল সবে, নাহিক 'চেতন' ।
তবু প্রেমে বুলে করি' প্রভুর অন্বেষণ ॥ ৪৩ ॥

विषादे विह्वल सबे, नाहिक 'चेतन' ।
तबु प्रेमे बुले करि' प्रभुर अन्वेषण ॥ ४३ ॥

विषादे—अत्यन्त खिन्न होकर; **विह्वल**—विह्वल; **सबे**—सब में; **नाहिक**—नहीं थी; **चेतन**—चेतना; **तबु**—फिर भी; **प्रेमे**—प्रेम में; **बुले**—घूमते रहे; **करि'**—करते हुए; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **अन्वेषण**—खोजते हुए।

अनुवाद

सारे लोग खिन्नता से विह्वल थे और लगभग अचेत जैसे हो गये थे, किन्तु प्रेमवश वे सभी महाप्रभु को खोजने के लिए इधर-उधर घूमते रहे।

দেখেন—এক জালিয়া আইসে কান্ধে জাল করি' ।
হাসে, কান্দে, নাচে, গায়, বলে 'হরি' 'হরি' ॥ ৪৪ ॥

देखेन—एक जालिया आइसे कान्धे जाल करि' ।
हासे, कान्दे, नाचे, गाय, बले 'हरि' 'हरि' ॥ ४४ ॥

देखेन—उन्होंने देखा; **एक जालिया**—एक मछुआरे को; **आइसे**—आते हुए; **कान्धे**—कन्धे पर; **जाल करि'**—जाल लेकर; **हासे**—हँसता; **कान्दे**—रोता; **नाचे**—नाचता; **गाय**—गाता; **बले**—कहता; **हरि हरि**—हरि, हरि।

अनुवाद

समुद्र तट से होकर जाते हुए सबों ने एक मछुआरे को आते देखा,

जो अपने कन्धे पर अपना जाल लिये था। वह हँसता, रोता, नाचता तथा गाता "हरि, हरि" का उच्चारण किये जा रहा था।

জালিয়ার চেষ্টা দেখি' সবার চমৎকার ।
স্বরূপ-গোসাঞি তারে পুছেন সমাচার ॥ ৪৫ ॥

জালিয়ার চেষ্টা দেখি' সবার চমৎকার ।
স্বরূপ-গোসাঞি তারে পুছেন সমাচার ॥ ৪৫ ॥

জালিয়ার—मछुआरे के; **চেষ্টা**—कार्यकलाप; **দেখি'**—देखकर; **সবার**—सब को; **চমৎকার**—आश्चर्य; **স্বরূপ-গোসাঞি**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **তারে**—उसको; **পুছেন**—पूछा; **সমাচার**—समाचार।

अनुवाद

मछुआरे के कार्यकलाप को देखकर सारे लोग आश्चर्यचकित हो गये। इसलिए स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने उससे समाचार पूछा।

"কহ, জালিয়া, এই দিকে দেখিলা এক-জন? ।
তোমার এই দশা কেনে,—কহত' কারণ?" ॥ ৪৬ ॥

"কহ, জালিয়া, এই দিকে দেখিলা এক-জন? ।
তোমার এই দশা কেনে,—কহত' কারণ?" ॥ ৪৬ ॥

কহ—कृपया कहो; **জালিয়া**—हे मछुआरे; **এই দিকে**—इस दिशा में; **দেখিলা**—तुमने देखा; **এক-জন**—कोई व्यक्ति; **তোমার**—तुम्हारी; **এই**—यह; **দশা**—दशा; **কেনে**—क्यों; **কহত'**—कृपया कहो; **কারণ**—कारण।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "हे मछुआरे, तुम ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हो? क्या तुमने इधर किसी व्यक्ति को देखा है? तुम्हारे इस व्यवहार का क्या कारण है? कृपा करके हमसे कहो।"

জালিয়া কহে,—"ইহাঁ এক মনুষ্য না দেখিল ।
জাল বাহিতে এক মৃতক মোর জালে আইল ॥ ৪৭ ॥

जालिया कहे,—"इहाँ एक मनुष्य ना देखिल ।
जाल वाहिते एक मृतक मोर जाले आइल ॥ ४७ ॥

जालिया कहे—मछुआरे ने कहा; **इहाँ**—यहाँ; **एक**—एक; **मनुष्य**—मनुष्य; **ना देखिल**—मैंने नहीं देखा; **जाल वाहिते**—जाल डालते समय; **एक**—एक; **मृतक**—शव; **मोर जाले**—मेरे जाल में; **आइल**—आया।

अनुवाद

मछुआरे ने उत्तर दिया, "मैंने यहाँ एक भी व्यक्ति को नहीं देखा, किन्तु जल में अपना जाल डालते समय मैंने एक शव को पकड़ा है।

বড় মজ্যা বলি' আমি উঠাইলুঁ যতনে ।
মৃতক দেখিতে মোর ভয় হৈল মনে ॥৪৮॥
बड़ मत्स्य बलि' आमि उठाइलुँ यतने ।
मृतक देखिते मोर भय हैल मने ॥ ४८ ॥

बड़—बड़ी; **मत्स्य**—मछली; **बलि'**—सोचकर; **आमि**—मैंने; **उठाइलुँ**—उठाया; **यतने**—सावधानी से; **मृतक**—शव को; **देखिते**—देखकर; **मोर**—मेरा; **भय**—भय; **हैल**—हो गया; **मने**—मन में।

अनुवाद

"मैंने यह सोचकर कि कोई बड़ी मछली है उसे बड़ी सावधानी से उठाया, किन्तु ज्योंहीं मैंने देखा कि यह एक शव है, तो मेरे मन में अति भय व्याप्त हो गया।

জাল খসাইতে তার অঙ্গ-স্পর্শ হ-ইল ।
স্পর্শ-মাত্রে সেই ভূত হৃদয়ে পশিল ॥৪৯॥
जाल खसाइते तार अङ्ग-स्पर्श ह-इल ।
स्पर्श-मात्रे सेइ भूत हृदये पशिल ॥ ४९ ॥

जाल—जाल; **खसाइते**—छुड़ाने के लिए; **तार**—उसके; **अङ्ग-स्पर्श**—शरीर का स्पर्श; **ह-इल**—हो गया; **स्पर्श-मात्रे**—ज्योंही मैंने स्पर्श किया; **सेइ**—वह; **भूत**—भूत; **हृदये**—मेरे हृदय में; **पशिल**—प्रविष्ट हो गया।

अनुवाद

"जब मैं जाल छुड़ाने का प्रयास कर रहा था, तब मैंने उस शरीर का स्पर्श किया और ज्योंही मैंने उसे स्पर्श किया, एक भूत मेरे हृदय में प्रविष्ट हो गया।

ভয়ে কম্প হৈল, মোর নেত্রে বহে জল ।
গদগদ বাণী, রোম উঠিল সকল ॥৫০॥

भये कम्प हैल, मोर नेत्रे वहे जल ।
गद्‌गद वाणी, रोम उठिल सकल ॥५०॥

भये—भय से; **कम्प**—काँपता हुआ; **हैल**—था; **मोर**—मेरा; **नेत्रे**—आँखों में; **वहे**—प्रवाह; **जल**—अश्रु; **गद्‌गद**—अवरुद्ध; **वाणी**—वाणी; **रोम**—रोम; **उठिल**—खड़े हो गये; **सकल**—सारे।

अनुवाद

"मैं भय से काँप उठा और मेरी आँखों से आंसू बहने लगे, मेरी वाणी अवरुद्ध होने लगी और मेरे शरीर के सारे रोम खड़े हो गये।

কিবা ব্রহ্ম-দৈত্য, কিবা ভূত, কহনে না যায় ।
দর্শন-মাত্রে মনুষ্যের পৈশে সেই কায় ॥৫১॥

किबा ब्रह्म-दैत्य, किबा भूत, कहने ना याय ।
दर्शन-मात्रे मनुष्येर पैशे सेइ काय ॥५१॥

किबा—या; **ब्रह्म-दैत्य**—ब्राह्मण का भूत; **किबा**—या; **भूत**—सामान्य भूत; **कहने ना याय**—मैं नहीं कह सकता; **दर्शन-मात्रे**—ज्योंही कोई देखता है; **मनुष्येर**—मनुष्य का; **पैशे**—प्रवेश कर जाता है; **सेइ काय**—शरीर में।

अनुवाद

"मैं नहीं जानता कि वह शव किसी मृत ब्राह्मण का भूत था या किसी सामान्य व्यक्ति का, किन्तु ज्योंही कोई इसे देखता है, तो यह उसके शरीर में प्रवेश कर जाता है।

শরীর দীঘল তার—হাত পাঁচ-সাত ।
একেক-হস্ত-পদ তার, তিন তিন হাত ॥৫২॥

शरीर दीघल तार—हात पाँच-सात ।
एकेक-हस्त-पद तार, तिन तिन हात ॥५२॥

शरीर—शरीर; **दीघल**—लम्बा; **तार**—उसका; **हात**—हाथ जितना; **पाँच-सात**—पाँच से सात; **एकेक**—प्रत्येक; **हस्त-पद**—हाथ तथा पाँव; **तार**—उसका; **तिन**—तीन; **तिन**—तीन; **हात**—हाथ।

अनुवाद

"इस भूत का शरीर बहुत लम्बा, पाँच-सात हाथ तक है। उसकी भुजाएँ तथा टाँगें तीन-तीन हाथ लम्बी हैं।

অস্থি-সন্ধি ছুটিলে চর্ম করে নড়-বড়ে ।
তাহা দেখি' প্রাণ কা'র নাহি রহে ধড়ে ॥৫৩॥
अस्थि-सन्धि छुटिले चर्म करे नड़-बड़े ।
ताहा देखि' प्राण का'र नाहि रहे धड़े ॥५३॥

अस्थि-सन्धि—हड्डियों के जोड़; **छुटिले**—अलग होकर; **चर्म**—चमड़ी; **करे**—हो गई है; **नड़-बड़े**—लटकती; **ताहा**—वह; **देखि'**—देखकर; **प्राण**—प्राण; **का'र**—जिसका; **नाहि**—नहीं; **रहे**—रहता; **धड़े**—शरीर में।

अनुवाद

"चमड़ी के नीचे के इसके सारे के सारे हड्डियों के जोड़ अलग-अलग हो गये हैं और पूरी तरह से ढीले हो चुके हैं। कोई इसे देख नहीं सकता, न उसे देखने पर कोई जीवित रह सकता है।

মড়া-রূপ ধরি' রহে উত্তান-নয়ন ।
কভু গোঁ-গোঁ করে, কভু রহে অচেতন ॥৫৪॥
मड़ा-रूप धरि' रहे उत्तान-नयन ।
कभु गों-गों करे, कभु रहे अचेतन ॥५४॥

मड़ा—शव का; **रूप**—रूप; **धरि'**—धारण किया है; **रहे**—रहता है; **उत्तान-नयन**—खुली आँखों के साथ; **कभु**—कभी-कभी; **गों-गों**—गों गों ध्वनि; **करे**—करता है; **कभु**—कभी-कभी; **रहे**—रहता है; **अचेतन**—अचेत।

अनुवाद

"उस भूत ने शव का रूप धारण कर लिया है, किन्तु उसकी आँखे खुली हुई हैं। कभी वह गों गों का शब्द करता है और कभी अचेत पड़ा रहता है।

সাক্ষাজ্দেখেছোঁ,—মোরে পাইল সেই ভূত ।
মুই মৈলে মোর কৈছে জীবে স্ত্রী-পুৎ ॥৫৫॥

साक्षात् देखेछों,—मोरे पाइल सेइ भूत ।
मुइ मैले मोर कैछे जीवे स्त्री-पुत् ॥५५॥

साक्षात्—प्रत्यक्ष; **देखेछों**—मैंने देखा है; **मोरे**—मेरे; **पाइल**—प्रविष्ट हुआ है; **सेइ**—वह; **भूत**—भूत; **मुइ मैले**—यदि मैं मर जाऊँ; **मोर**—मेरे; **कैछे**—कैसे; **जीवे**—जीयेंगे; **स्त्री-पुत्**—पत्नी तथा बच्चे।

अनुवाद

"मैंने उस भूत को प्रत्यक्ष देखा है और वह मेरे चारों ओर घूम रहा है। किन्तु यदि मैं मर जाऊँ, तो मेरी पत्नी तथा बच्चों की देखभाल कौन करेगा?

সেই ত' ভূতের কথা কহন না যায় ।
ওঝা-ঠাঞি যাইছোঁ,—যদি সে ভূত ছাড়ায় ॥৫৬॥

सेइ त' भूतेर कथा कहन ना य्राय ।
ओझा-ठाञि य्राइछों,—य्रदि से भूत छाड़ाय ॥५६॥

सेइ—वह; **त'**—निश्चय ही; **भूतेर**—भूत की; **कथा**—बात; **कहन**—कहना; **ना य्राय**—सम्भव नहीं है; **ओझा-ठाञि**—ओझा को; **य्राइछों**—मैं जा रहा हूँ; **य्रदि**—यदि; **से**—वह; **भूत**—भूत; **छाड़ाय**—छुटकारा दिला सकता है।

अनुवाद

"उस भूत के बारे में कुछ कह पाना सचमुच बहुत कठिन है, किन्तु मैं कोई ओझा को ढूँढने जा रहा हूँ और मैं उससे पूछूँगा कि क्या वह मुझे इससे छुटकारा दिला सकता है?

একা রাত্র্যে বুলি' মৎস্য মারিয়ে নির্জনে ।
ভূত-প্রেত আমার না লাগে 'নৃসিংহ'-স্মরণে ॥৫৭॥

एका रात्र्ये बुलि' मत्स्य मारिये निर्जने ।
भूत-प्रेत आमार ना लागे 'नृसिंह'-स्मरणे ॥५७॥

एका—अकेला; **रात्र्ये**—रात में; **बुलि'**—फिरता हूँ; **मत्स्य**—मछली; **मारिये**—मारता हूँ; **निर्जने**—एकान्त स्थान में; **भूत-प्रेत**—भूत-प्रेत; **आमार**—मुझे; **ना लागे**—छू नहीं सकते; **नृसिंह-स्मरणे**—भगवान् नृसिंह का स्मरण करने से।

अनुवाद

"मैं रात में एकान्त स्थानों में मछली मारता फिरता हूँ; फिर भी भूत प्रेत मुझे नहीं छू पाते, क्योंकि मैं नृसिंह देव की स्तुति का स्मरण करता हूँ।

এই ভূত নৃসিংহ-নামে চাপয়ে দ্বিগুণে ।
তাহার আকার দেখিতে ভয় লাগে মনে ॥৫৮॥

एइ भूत नृसिंह-नामे चापये द्विगुणे ।
ताहार आकार देखिते भय लागे मने ॥५८॥

एइ भूत—यह भूत; **नृसिंह-नामे**—भगवान् नृसिंह के पवित्र नाम से; **चापये**—मुझ पर आ जाता है; **द्वि-गुणे**—दूगनी शक्ति के साथ; **ताहार**—उसका; **आकार**—रूप; **देखिते**—देखकर; **भय**—भय; **लागे मने**—मन में होता है।

अनुवाद

"किन्तु यह भूत मेरे द्वारा नृसिंह मन्त्र का उच्चारण करने पर दूनी शक्ति से मुझे पछाड़ देता है। इस भूत को देखते ही मेरे मन में अत्यधिक भय उठने लगता है।

ওথা না যাইহ, আমি নিষেধি তোমারে ।
তাহাঁ গেলে সেই ভূত লাগিবে সবারে" ॥৫৯॥

ओथा ना याइह, आमि निषेधि तोमारे ।
ताहाँ गेले सेइ भूत लागिबे सबारे" ॥५९॥

ओथा—वहाँ; **ना याइह**—न जायें; **आमि**—मैं; **निषेधि**—मना करता हूँ; **तोमारे**—आप; **ताहाँ**—वहाँ; **गेले**—यदि जायेंगे; **सेइ भूत**—वह भूत; **लागिबे**—पकड़ लेगा; **सबारे**—आप सबको।

अनुवाद

"आप वहाँ मत जायें। मैं आपको मना करता हूँ। यदि आप जायेंगे, तो वह भूत आप सबको पकड़ लेगा।"

এত শুনি' স্বরূপ-গোসাঞি সব তত্ত্ব জানি' ।
জালিয়ারে কিছু কয় সুমধুর বাণী ॥৬০॥

এত শুনি' স্বরূপ-গোসাঞি সব তত্ত্ব জানি' ।
জালিয়ারে কিছু কয় সুমধুর বাণী ॥ ৬০ ॥

এত শুনি'—यह सुनकर; **স্বরূপ-গোসাঞি**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **সব**—सब; **তত্ত্ব**—हकीकत; **জানি'**—समझकर; **জালিয়ারে**—मछुआरे को; **কিছু**—कुछ; **কয়**—कहा; **সু-মধুর**—मधुर; **বাণী**—शब्द।

अनुवाद

यह सुनकर स्वरूप दामोदर इस बात की पूरी हकीकत समझ गये। वे उस मछुआरे से मधुर वाणी में बोले।

'আমি—বড় ওঝা জানি ভূত ছাড়াইতে' ।
মন্ত্র পড়ি' শ্রী-হস্ত দিলা তাহার মাথাতে ॥৬১॥

'আমি—বড় ওঝা জানি ভূত ছাড়াইতে' ।
মন্ত্র পড়ি' শ্রী-হস্ত দিলা তাহার মাথাতে ॥ ৬১ ॥

আমি—मैं; **বড়**—बड़ा; **ওঝা**—ओझा; **জানি**—मैं जानता हूँ; **ভূত**—भूत; **ছাড়াইতে**—कैसे छुड़ाना है; **মন্ত্র পড়ি'**—मन्त्र पढ़कर; **শ্রী-হস্ত**—अपना हाथ; **দিলা**—रखा; **তাহার মাথাতে**—उसके सिर पर।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "मैं एक प्रसिद्ध ओझा हूँ और मैं जानता हूँ कि तुम्हें इस भूत से कैसे छुड़ाना होगा।" तब उन्होंने कुछ मन्त्र पढ़े और मछुआरे के सिर पर अपना हाथ रखा।

তিন চাপড় মারি' কহে,—'ভূত পলাইল ।
ভয় না পাইহ'—বলি' সুস্থির করিল ॥৬২॥

तिन चापड़ मारि' कहे,—'भूत पलाइल ।
भय ना पाइह'—बलि' सुस्थिर करिल ॥ ६२ ॥

तिन चापड़ मारि'—तीन थप्पड़ मारकर; **कहे**—कहा; **भूत**—भूत; **पलाइल**—भाग गया है; **भय ना पाइह**—डरो मत; **बलि'**—कहकर; **सु-स्थिर करिल**—सान्त्वना दी।

अनुवाद

उन्होंने उस मछुआरे को तीन थप्पड़ लगाये और कहा, "अब भूत भाग गया है। डरो मत।" यह कहकर उन्होंने मछुआरे को सान्त्वना दी।

একে প্রেম, আরে ভয়,—দ্বিগুণ অস্থির ।
ভয়-অংশ গেল,—সে হৈল কিছু ধীর ॥৬৩॥

एके प्रेम, आरे भय,—द्विगुण अस्थिर ।
भय-अंश गेल,—से हैल किछु धीर ॥ ६३ ॥

एके—एक ओर; **प्रेम**—प्रेमावेश; **आरे**—दूसरी ओर; **भय**—भय; **द्वि-गुण**—दुगुना; **अस्थिर**—चंचल; **भय-अंश**—भय का अंश; **गेल**—चला गया; **से**—वह; **हैल**—हो गया; **किछु**—कुछ; **धीर**—शान्त।

अनुवाद

मछुआरा उन्मत प्रेम से प्रभावित था, किन्तु भयभीत भी था। इस तरह वह दुगुना चंचल हो गया था। किन्तु अब उसका भय शमित हो चुका था और वह कुछ सामान्य हो गया था।

স্বরূপ কহে,—"যাঁরে তুমি কর 'ভূত'-জ্ঞান ।
ভূত নহে—তেঁহো কৃষ্ণ-চৈতন্য ভগবান্ ॥৬৪॥

स्वरूप कहे,—"याँरे तुमि कर 'भूत'-ज्ञान ।
भूत नहे—तेंहो कृष्ण-चैतन्य भगवान् ॥ ६४ ॥

स्वरूप कहे—स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने कहा; **याँरे**—जिस व्यक्ति को; **तुमि**—तुम; **कर भूत-ज्ञान**—भूत मान रहे हो; **भूत नहे**—भूत नहीं हैं; **तेंहो**—वे; **कृष्ण-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भगवान्**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने मछुआरे से कहा, "हे महाशय, जिसे तुम भूत मान रहे हो वह वास्तव में भूत नहीं, अपितु पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु हैं।

प्रेमावेशे पड़िला तेँहो समुद्रेर जले ।
ताँरे तुमि उठाइला आपनार जाले ॥ ६५ ॥

प्रेमावेशे पड़िला तेंहो समुद्रेर जले ।
ताँरे तुमि उठाइला आपनार जाले ॥ ६५ ॥

प्रेम-आवेशे—प्रेमावेश के कारण; **पड़िला**—गिर गये; **तेंहो**—वे; **समुद्रेर जले**—समुद्र के जल में; **ताँरे**—उनको; **तुमि**—तुमने; **उठाइला**—बाहर निकाला; **आपनार जाले**—तुम्हारे जाल में।

अनुवाद

"प्रेमावेश के कारण महाप्रभु समुद्र में गिर पड़े और तुमने उन्हें अपने जाल में पकड़कर उनकी रक्षा की है।

তাঁর স্পর্শে হ-ইল তোমার কৃষ্ণ-প্রেমোদয় ।
ভূত-প্রেত-জ্ঞানে তোমার হৈল মহা-ভয় ॥ ৬৬ ॥

তাঁর স্পর্শে হ-ইল তোমার কৃষ্ণ-প্রেমোদয় ।
ভূত-প্রেত-জ্ঞানে তোমার হৈল মহা-ভয় ॥ ৬৬ ॥

তাঁর স্পর্শে—उनके स्पर्श से; **হ-ইল**—था; **তোমার**—तुम्हारा; **কৃষ্ণ-প্রেম-উদয়**—कृष्ण-प्रेम का उदय; **ভূত-প্রেত-জ্ঞানে**—भूत मानकर; **তোমার**—तुम्हारा; **হৈল**—हुआ; **মহা-ভয়**—बहुत भय।

अनुवाद

"उनके स्पर्श मात्र से तुम्हारा सुप्त कृष्ण-प्रेम जाग उठा है, किन्तु तुमने उन्हें भूत मान लिया था, इसीलिए तुम उनसे इतना अधिक डरे हुए थे।

এবে ভয় গেল, তোমার মন হৈল স্থিরে ।
কাহাঁ তাঁরে উঠাঞাছ, দেখাহ আমারে'' ॥৬৭॥

एबे भय गेल, तोमार मन हैल स्थिरे ।
काहाँ ताँरे उठाञाछ, देखाह आमारे" ॥ ६७॥

एबे—अब; **भय**—भय; **गेल**—चला गया है; **तोमार**—तुम्हारा; **मन**—मन; **हैल**—हुआ है; **स्थिरे**—शान्त; **काहाँ**—कहाँ; **ताँरे**—उनको; **उठाञाछ**—तुमने उठाया; **देखाह**—जगह दिखाओ; **आमारे**—मुझे।

अनुवाद

"अब चूँकि तुम्हारा भय जा चुका है और तुम्हारा मन शान्त है, अतएव मुझे दिखलाओ कि वे कहाँ हैं?"

জালিয়া কহে,—''প্রভুরে দেখ্যাছোঁ বার-বার ।
তেঁহো নহেন, এই অতি-বিকৃত আকার'' ॥৬৮॥

जालिया कहे,—"प्रभुरे देख्याछों बार-बार ।
तेंहो नहेन, एइ अति-विकृत आकार" ॥ ६८॥

जालिया कहे—मछुआरे ने कहा; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **देख्याछों**—मैंने देखा है; **बार-बार**—कई बार; **तेंहो**—उनको; **नहेन**—नहीं हैं; **एइ**—यह; **अति-विकृत**—अत्यन्त विकृत; **आकार**—शरीर।

अनुवाद

मछुआरे ने उत्तर दिया, "मैंने महाप्रभु को कई बार देखा है, किन्तु वे यह नहीं हैं। यह शरीर तो अत्यन्त विकृत है।"

স্বরূপ কহে,—''তাঁর হয় প্রেমের বিকার ।
অস্থি-সন্ধি ছাড়ে, হয় অতি দীর্ঘাকার'' ॥৬৯॥

स्वरूप कहे,—"ताँर हय प्रेमेर विकार ।
अस्थि-सन्धि छाड़े, हय अति दीर्घाकार" ॥ ६९॥

स्वरूप कहे—स्वरूप दामोदर ने कहा; **ताँर**—उनका; **हय**—है; **प्रेमेर**—भगवत्प्रेम; **विकार**—शरीर का विकार; **अस्थि-सन्धि**—हड्डियों के जोड़; **छाड़े**—अलग हो जाते हैं; **हय**—होता है; **अति**—अत्यन्त; **दीर्घ-आकार**—लम्बा शरीर।

अनुवाद

स्वरूप दामोदर ने कहा, "महाप्रभु का शरीर ईश्वर-प्रेम के कारण विकृत हो जाता है। कभी उनकी हड्डियों के जोड़ अलग हो जाते हैं और उनका शरीर अत्यन्त लम्बा हो जाता है।"

शुनि, सेई जालिया आनन्दित ह-इल ।
सबा लञा गेल, महाप्रभुरे देखाइल ॥७०॥

शुनि, सेइ जालिया आनन्दित ह-इल ।
सबा लञा गेल, महाप्रभुरे देखाइल ॥७०॥

शुनि'—सुनकर; **सेइ**—वह; **जालिया**—मछुआरा; **आनन्दित ह-इल**—अत्यन्त प्रसन्न हुआ; **सबा लञा**—सबको लेकर; **गेल**—गया; **महाप्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **देखाइल**—दिखाये।

अनुवाद

यह सुनकर मछुआरा अत्यधिक प्रसन्न हुआ। उसने अपने साथ सारे भक्तों को ले जाकर उन्हें श्री चैतन्य महाप्रभु का स्थान दिखलाया।

भूमिते पड़ि' आछे प्रभु दीर्घ सब काय ।
जले श्वेत-तनु, बालु लागियाछे गाय ॥७१॥

भूमिते पड़ि' आछे प्रभु दीर्घ सब काय ।
जले श्वेत-तनु, वालु लागियाछे गाय ॥७१॥

भूमिते—भूमि पर; **पड़ि'**—पड़े थे; **आछे**—थे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **दीर्घ**—लम्बा; **सब काय**—सारा शरीर; **जले**—जल से; **श्वेत-तनु**—श्वेत शरीर; **वालु**—बालू; **लागियाछे गाय**—शरीर पर लगी थी।

अनुवाद

महाप्रभु भूमि पर लेटे थे। उनका शरीर लम्बा तथा जल से सफेद रंग का हो गया था। वे सिर से पाँव तक बालू से सने थे।

अति-दीर्घ शिथिल तनु-चर्म नट्काय ।
दूर पथ उठाञा घरे आनान ना याय ॥७२॥

अति-दीर्घ शिथिल तनु-चर्म नट्काय ।
दूर पथ उठाञा घरे आनान ना य्राय ॥ ७२ ॥

अति-दीर्घ—अत्यधिक लम्बा; **शिथिल**—शिथिल; **तनु**—शरीर; **चर्म**—चमड़ी; **नट्काय**—लटक रही थी; **दूर पथ**—लम्बी दूरी; **उठाञा**—उठाकर; **घरे**—घर; **आनान**—ले जाना; **ना य्राय**—सम्भव नहीं था।

अनुवाद

महाप्रभु का शरीर लम्बा हो गया था और उनकी चमड़ी ढीली होकर लटक रही थी। उन्हें उठाकर लम्बी दूरी तक घर ले जाना असम्भव था।

আর্দ্র কৌপীন দূর করি' শুষ্ক পরাঞা ।
বহির্বাসে শোয়াইলা বালুকা ছাড়াঞা ॥ ৭৩ ॥
आर्द्र कौपीन दूर करि' शुष्क पराञा ।
बहिर्वासे शोयाइला वालुका छाड़ाञा ॥ ७३ ॥

आर्द्र—गीला; **कौपीन**—कौपीन; **दूर करि'**—दूर करके; **शुष्क**—सूखा; **पराञा**—पहनाया; **बहिर्वासे**—उत्तरीय वस्त्र; **शोयाइला**—लिटाया; **वालुका**—बालू; **छाड़ाञा**—हाटाई।

अनुवाद

भक्तों ने उनका गीला कौपीन हटाया और उसके स्थान पर सूखा कौपीन पहनाया। तब उन्होंने महाप्रभु को उत्तरीय वस्त्र पर लिटाकर उनके शरीर की बालू हटाई।

সবে মেলি' উচ্চ করি' করেন সঙ্কীর্তনে ।
উচ্চ করি' কৃষ্ণ-নাম কহেন প্রভুর কাণে ॥ ৭৪ ॥
सबे मेलि' उच्च करि' करेन सङ्कीर्तने ।
उच्च करि' कृष्ण-नाम कहेन प्रभुर काणे ॥ ७४ ॥

सबे मेलि'—सब ने मिलकर; **उच्च करि'**—उच्च स्वर से; **करेन**—किया; **सङ्कीर्तने**—पवित्र नाम का कीर्तन; **उच्च करि'**—जोर से; **कृष्ण-नाम**—कृष्ण का पवित्र नाम; **कहेन**—कहा; **प्रभुर काणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के कान में।

अनुवाद

उन सबों ने महाप्रभु के कान में कृष्ण का उच्च स्वर से पवित्र नाम लेकर संकीर्तन किया।

कत-क्षणे प्रभुर काणे शब्द परशिल ।
हुङ्कार करिया प्रभु तबहि उठिल ॥७५॥

कत-क्षणे प्रभुर काणे शब्द परशिल ।
हुङ्कार करिया प्रभु तबहि उठिल ॥७५॥

कत-क्षणे—कुछ समय के बाद; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **काणे**—कान में; **शब्द**—ध्वनि; **परशिल**—प्रविष्ट हुई; **हुङ्कार करिया**—हुंकार करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तबहि**—तुरन्त; **उठिल**—उठ खड़े हुए।

अनुवाद

कुछ समय के बाद महाप्रभु के कान में पवित्र नाम की ध्वनि प्रविष्ट हुई, तो वे उच्च हुंकार करते हुए तुरन्त उठ खड़े हुए।

उठितेइ अस्थि सब लागिल निज-स्थाने ।
'अर्ध-बाह्ये' इति-उति करेन दरशने ॥७६॥

उठितेइ अस्थि सब लागिल निज-स्थाने ।
'अर्ध-बाह्ये' इति-उति करेन दरशने ॥७६॥

उठितेइ—उनके उठते ही; **अस्थि**—हड्डियाँ; **सब**—सब; **लागिल**—आ गईं; **निज-स्थाने**—अपने स्थानों में; **अर्ध-बाह्ये**—अर्धबाह्य चेतना में; **इति-उति**—इधर-उधर; **करेन दरशने**—देखने लगे।

अनुवाद

उनके उठते ही उनकी हड्डियाँ अपने सही स्थानों पर आ गईं। महाप्रभु ने आर्ध बाह्य चेतना से इधर-उधर देखा।

तिन-दशाय महाप्रभु रहेन सर्व-काल ।
'अन्तर्दशा', 'बाह्य-दशा', 'अर्ध-बाह्य' आर ॥७७॥

तिन-दशाय महाप्रभु रहेन सर्व-काल ।
'अन्तर्दशा', 'बाह्य-दशा', 'अर्ध-बाह्य' आर ॥ ७७ ॥

तिन-दशाय—तीन दशाओं में; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **रहेन**—रहते थे; **सर्व-काल**—सभी समय; **अन्तः-दशा**—आन्तरिक दशा; **बाह्य-दशा**—बाह्य दशा; **अर्ध-बाह्य**—अर्धबाह्य चेतना; **आर**—तथा।

अनुवाद

महाप्रभु सभी समय चेतना की तीन दशाओं—अन्तः, बहिः तथा अर्धबाह्य दशाओं—में से किसी एक में रहते थे।

অন্তর্দশার কিছু ঘোর, কিছু বাহ্য-জ্ঞান ।
সেই দশা কহে ভক্ত 'অর্ধ-বাহ্য'-নাম ॥ ৭৮ ॥

अन्तर्दशार किछु घोर, किछु बाह्य-ज्ञान ।
सेइ दशा कहे भक्त 'अर्ध-बाह्य'-नाम ॥ ७८ ॥

अन्तः-दशार—आन्तरिक दशा को; **किछु**—कुछ; **घोर**—गहरी अवस्था; **किछु**—कुछ; **बाह्य-ज्ञान**—बाह्य चेतना; **सेइ दशा**—वह दशा; **कहे**—कहते हैं; **भक्त**—भक्त; **अर्ध-बाह्य**—अर्धबाह्य चेतना; **नाम**—नाम से।

अनुवाद

जब महाप्रभु अन्तःचेतना में गम्भीरता से मग्न रहते हुए भी कुछ बाह्य चेतना प्रदर्शित करते थे, तो भक्त उनकी इस दशा को अर्धबाह्य कहते थे।

'অর্ধ-বাহ্যে' কহেন প্রভু প্রলাপ-বচনে ।
আকাশে কহেন প্রভু, শুনেন ভক্ত-গণে ॥ ৭৯ ॥

'अर्ध-बाह्ये' कहेन प्रभु प्रलाप-वचने ।
आकाशे कहेन प्रभु, शुनेन भक्त-गणे ॥ ७९ ॥

अर्ध-बाह्ये—अर्धबाह्य चेतना में; **कहेन**—कहते हैं; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **प्रलाप-वचने**—उन्मत्तता भरे शब्द; **आकाशे**—आकाश से; **कहेन**—बातें करते; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **शुनेन**—सुनते; **भक्त-गणे**—भक्तगण।

अनुवाद

इस अर्धबाह्य चेतना में श्री चैतन्य महाप्रभु उन्मत्त की तरह बातें करते थे। भक्तगण उन्हें आकाश से बातें करते स्पष्ट रूप से देख सकते थे।

''कालिन्दी देखिया आमि गेलाङ वृन्दावन ।
देखि,—जल-क्रीड़ा करेन व्रजेन्द्र-नन्दन ॥८०॥

''कालिन्दी देखिया आमि गेलाङ वृन्दावन ।
देखि,—जल-क्रीड़ा करेन व्रजेन्द्र-नन्दन ॥८०॥

कालिन्दी—यमुना नदी; **देखिया**—देखकर; **आमि**—मैं; **गेलाङ**—गया; **वृन्दावन**—वृन्दावन; **देखि**—मैंने देखी; **जल-क्रीड़ा**—जलक्रीड़ा; **करेन**—करते हुए; **व्रजेन्द्र-नन्दन**—नन्द महाराज के पुत्र कृष्ण।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "यमुना नदी को देखकर मैं वृन्दावन चला गया। वहाँ मैंने नन्द महाराज के पुत्र को जल में क्रीड़ा करते देखा।

राधिकादि गोपी-गण-सङ्गे एकत्र मेलि' ।
यमुनार जले महा-रङ्गे करेन केलि ॥८१॥

राधिकादि गोपी-गण-सङ्गे एकत्र मेलि' ।
यमुनार जले महा-रङ्गे करेन केलि ॥८१॥

राधिका-आदि—श्रीमती राधारानी इत्यादि; **गोपी-गण-सङ्गे**—गोपियों के साथ; **एकत्र मेलि'**—साथ मिलकर; **यमुनार**—यमुना नदी के; **जले**—जल में; **महा-रङ्गे**—अत्यन्त क्रीड़ामय ढंग से; **करेन केलि**—लीलाएँ करते थे।

अनुवाद

"भगवान् कृष्ण श्रीमती राधारानी इत्यादि गोपियों के साथ यमुना के जल में थे। वे अत्यन्त क्रीड़ामय ढंग से लीलाएँ कर रहे थे।

तीरे रहि' देखि आमि सखी-गण-सङ्गे ।
एक-सखी सखी-गणे देखाय सेइ रङ्गे ॥८२॥

तीरे रहि' देखि आमि सखी-गण-सङ्गे ।
एक-सखी सखी-गणे देखाय सेइ रङ्गे ॥ ८२ ॥

तीरे—तट पर; **रहि'**—खड़े होकर; **देखि**—देखी; **आमि**—मैंने; **सखी-गण-सङ्गे**—गोपियों के साथ; **एक-सखी**—एक गोपी; **सखी-गणे**—दूसरी गोपी को; **देखाय**—दिखला रही थी; **सेइ रङ्गे**—वह लीला।

अनुवाद

"मैंने यह लीला गोपियों के साथ यमुना के किनारे खड़े होकर देखी। एक गोपी दूसरी गोपियों को राधा तथा कृष्ण की जल लीला दिखला रही थी।

পট্ট-বস্ত্র, অলঙ্কারে, সমর্পিয়া সখী-করে,
সূক্ষ্ম-শুক্ল-বস্ত্র-পরিধান ।
কৃষ্ণ লঞা কান্তা-গণ, কৈলা জলাবগাহন,
জল-কেলি রচিলা সুঠাম ॥ ৮৩ ॥

पट्ट-वस्त्र, अलङ्कारे, समर्पिया सखी-करे,
सूक्ष्म-शुक्ल-वस्त्र-परिधान ।
कृष्ण लञा कान्ता-गण, कैला जलावगाहन,
जल-केलि रचिला सुठाम ॥ ८३ ॥

पट्ट-वस्त्र—रेशमी वस्त्र; **अलङ्कारे**—गहने; **समर्पिया**—सौंप दिये; **सखी-करे**—अपनी गोपी सखी को; **सूक्ष्म**—महीन; **शुक्ल-वस्त्र**—श्वेत वस्त्र; **परिधान**—धारण करके; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **लञा**—लेकर; **कान्ता-गण**—प्रिय गोपियाँ; **कैला**—किया; **जल-अवगाहन**—जल में स्नान; **जल-केलि**—जलक्रीड़ाएँ; **रचिला**—की; **सु-ठाम**—अत्युत्तम।

अनुवाद

"सारी गोपियों ने अपने रेशमी वस्त्र तथा आभूषण अपनी सखियों को सौंप दिये और महीन सफेद वस्त्र धारण कर लिया। भगवान् कृष्ण ने अपनी प्रिय गोपियों को साथ लेकर स्नान किया और यमुना के जल में अत्युत्तम लीलाएँ सम्पन्न कीं।

সখি হে, দেখ কৃষ্ণের জল-কেলি-রঙ্গে
কৃষ্ণ মত্ত করি-বর, চঞ্চল কর-পুষ্কর, ।
গোপী-গণ করিণীর সঙ্গে ॥ ৮৪ ॥

सखि हे, देख कृष्णेर जल-केलि-रङ्गे
कृष्ण मत्त करि-वर, चञ्चल कर-पुष्कर, ।
गोपी-गण करिणीर सङ्गे ॥ ८४ ॥

सखि हे—हे सखियों; **देख**—जरा देखो; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण की; **जल-केलि**—जलक्रीड़ा की; **रङ्गे**—परिहासमय; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **मत्त**—उन्मत्त; **करि-वर**—हाथियों का सरदार; **चञ्चल**—चंचल; **कर-पुष्कर**—कमल समान हथेलियाँ; **गोपी-गण**—गोपियाँ; **करिणीर**—हथिनियों के; **सङ्गे**—संग में।

अनुवाद

"हे सखियों, जरा कृष्ण की जलक्रीड़ा को तो देखो! कृष्ण की चंचल हथेलियाँ कमल के फूल समान हैं। कृष्ण उन्मत्त हाथियों के सरदार लगते हैं और उनके साथ की गोपियाँ हथिनियों जैसी हैं।

আরম্ভিলা জল-কেলি, অন্যো'ন্যে জল ফেলাফেলি,
হুড়াহুড়ি, বর্ষে জল-ধার ।
সবে জয়-পরাজয়, নাহি কিছু নিশ্চয়,
জল-যুদ্ধ বাড়িল অপার ॥ ৮৫ ॥

আরম্ভিলা জল-কেলি, অন্যো'ন্যে জল ফেলাফেলি,
হুড়াহুড়ি, বর্ষে জল-ধার ।
সবে জয়-পরাজয়, নাহি কিছু নিশ্চয়,
জল-যুদ্ধ বাড়িল অপার ॥ ৮৫ ॥

आरम्भिला—प्रारम्भ हुई; **जल-केलि**—जलक्रीड़ा; **अन्यो'न्ये**—एक-दूसरे पर; **जल-फेलाफेलि**—उछालने लगे; **हुड़ाहुड़ि**—प्रबल कार्य; **वर्षे**—वर्षा; **जल-धार**—जल की बौछार; **सबे**—उन सब; **जय-पराजय**—हार तथा जीत; **नाहि**—नहीं; **किछु**—कोई; **निश्चय**—निश्चित; **जल-युद्ध**—जल-युद्ध; **बाड़िल**—बढ़ा; **अपार**—अपार।

अनुवाद

"जल क्रीड़ा प्रारम्भ हुई और हर कोई आगे-पीछे जल उछालने लगा। जल की प्रबल उथल-पुथल में यह निश्चित नहीं हो पा रहा था कि कौन

सा पक्ष जीत रहा है और कौन सा हार रहा है। यह जल युद्ध (जलकेलि) की क्रीड़ा अपार रीति से बढ़ती गई।

वर्षे स्थिर तड़िदगण, सिञ्चे श्याम नव-घन,
घन वर्षे तड़ितुपरे ।
सखी-गणेर नयन, तृषित चातक-गण,
सेइ अमृत सुखे पान करे ॥ ८६॥

वर्षे स्थिर तड़िद्गण, सिञ्चे श्याम नव-घन,
घन वर्षे तड़ित् उपरे ।
सखी-गणेर नयन, तृषित चातक-गण,
सेइ अमृत सुखे पान करे ॥ ८६॥

वर्षे—उस वर्षा में; **स्थिर**—स्थिर; **तड़ित्-गण**--बिजली की रेखा; **सिञ्चे**—छिड़कना; **श्याम**—श्याम; **नव-घन**—नवीन बादल; **घन**—बादल; **वर्षे**—वर्षा; **तड़ित्-उपरे**—बिजली की रेखाओं पर; **सखी-गणेर**—गोपियों की; **नयन**—आँखें; **तृषित**—प्यासे; **चातक-गण**—चातक पक्षी; **सेइ अमृत**—वह अमृत; **सुखे**—सुख में; **पान करे**—पान कर रही थीं।

अनुवाद

"गोपियाँ बिजली की स्थिर रेखाओं जैसी थीं और कृष्ण श्याम मेघ के तुल्य थे। बिजली ने बादल के ऊपर जल छिड़कना शुरू किया और बादल ने बिजली पर। गोपियों की आँखें तृषित पपीहों की तरह बादल के अमृततुल्य जल को सुखपूर्वक पिये जा रही थीं।

प्रथमे युद्ध 'जलाजलि', तबे युद्ध 'कराकरि',
तार पाछे युद्ध 'मुखामुखि' ।
तबे युद्ध 'हृदाहृदि', तबे हैल 'रदारदि',
तबे हैल युद्ध 'नखानखि' ॥ ८७॥

प्रथमे युद्ध 'जलाजलि', तबे युद्ध 'कराकरि',
तार पाछे युद्ध 'मुखामुखि' ।
तबे युद्ध 'हृदाहृदि', तबे हैल 'रदारदि',
तबे हैल युद्ध 'नखानखि' ॥ ८७॥

प्रथमे—प्रारम्भ में; **युद्ध**—युद्ध; **जलाजलि**—एक-दूसरे पर पानी उछालना; **तबे**—तब; **युद्ध**—युद्ध; **कराकरि**—हाथ से हाथ; **तार पाछे**—इसके बाद; **युद्ध**—युद्ध; **मुखामुखि**—मुख से मुख; **तबे**—तब; **युद्ध**—युद्ध; **हृदाहृदि**—छाती से छाती; **तबे**—तब; **हैल**—था; **रदारदि**—दाँत से दाँत; **तबे**—तब; **हैल**—था; **युद्ध**—युद्ध; **नखानखि**—नाखून से नाखून।

अनुवाद

"जब युद्ध प्रारम्भ हो गया, तो उन्होंने एक दूसरे पर पानी उछाला। तब उन्होंने हाथ से हाथ, फिर मुख से मुख, छाती से छाती, दाँत से दाँत और अन्त में नाखून से नाखून की लड़ाई की।

सहस्र-करे जल सेके, सहस्र नेत्रे गोपी देखे,
सहस्र-पदे निकट गमने ।
सहस्र-मुख-चुम्बने, सहस्र-वपु-सङ्गमे,
गोपी-नर्म शुने सहस्र-काणे ॥ ८८ ॥

सहस्र-करे जल सेके, सहस्र नेत्रे गोपी देखे,
सहस्र-पदे निकट गमने ।
सहस्र-मुख-चुम्बने, सहस्र-वपु-सङ्गमे,
गोपी-नर्म शुने सहस्र-काणे ॥ ८८ ॥

सहस्र—हजारों; **करे**—हाथों से; **जल**—जल; **सेके**—उछाला; **सहस्र**—हजारों; **नेत्रे**—आँखों से; **गोपी**—गोपियाँ; **देखे**—देखा; **सहस्र**—हजारों; **पदे**—पाँवों से; **निकट**—निकट; **गमने**—जाने में; **सहस्र**—हजारों; **मुख**—मुखों; **चुम्बने**—चुम्बन किया; **सहस्र**—हजारों; **वपु**—शरीरों; **सङ्गमे**—आलिंगन किया; **गोपी**—गोपियाँ; **नर्म**—परिहास; **शुने**—सुना; **सहस्र**—हजारों; **काणे**—कानों में।

अनुवाद

"हजारों हाथों ने पानी उछाला और गोपियों ने कृष्ण को हजारों आँखों से देखा। वे हजारों पाँवों से उनके निकट आईं और उन्होंने हजारों मुखों से उनका चुम्बन किया। हजारों शरीरों ने उनका आलिंगन किया। गोपियों ने हजारों कानों से उनके परिहास-वचन सुने।

কৃষ্ণ রাধা লঞা বলে, গেলা কণ্ঠ-দগ্ন জলে,
ছাড়িলা তাহাঁ, যাহাঁ অগাধ পানী ।
তেঁহো কৃষ্ণ-কণ্ঠ ধরি', ভাসে জলের উপরি,
গজোত্খাতে যৈছে কমলিনী ॥ ৮৯ ॥

কৃষ্ণ রাধা লঞা বলে, গেলা কণ্ঠ-দগ্ন জলে,
ছাড়িলা তাহাঁ, যাহাঁ অগাধ পানী ।
তেঁহো কৃষ্ণ-কণ্ঠ ধরি', ভাসে জলের উপরি,
গজোত্খাতে যৈছে কমলিনী ॥ ৮৯ ॥

কৃষ্ণ—भगवान् कृष्ण; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **लञा**—लेकर; **बले**—बलपूर्वक; **गेला**—गये; **कण्ठ-दग्न**—गले तक; **जले**—जल में; **छाड़िला**—छोड़ दिया; **ताहाँ**—वहाँ; **याहाँ**—कहाँ; **अगाध**—अति गहरा; **पानी**—पानी; **तेंहो**—वे; **कृष्ण-कण्ठ**—कृष्ण का गला; **धरि'**—पकड़कर; **भासे**—तैरती रही; **जलेर उपरि**—जल पर; **गज-उत्खाते**—हाथी द्वारा तोड़ा गया; **यैछे**—जैसे; **कमलिनी**—कमल पुष्प।

अनुवाद

"कृष्ण श्रीमती राधारानी को बलपूर्वक दूर बहाकर उनके गले तक पानी के भीतर ले गये। तब उन्होंने उन्हें वहाँ पर छोड़ दिया, जहाँ पानी बहुत गहरा था। किन्तु उन्होंने कृष्ण का गला पकड़ लिया और पानी के ऊपर इस तरह तैरती रहीं, मानो हाथी की सूँड द्वारा तोड़ा गया कमल का फूल हो।

যত গোপ-সুন্দরী, কৃষ্ণ তত রূপ ধরি',
সবার বস্ত্র করিলা হরণে ।
যমুনা-জল নির্মল, অঙ্গ করে ঝলমল,
সুখে কৃষ্ণ করে দরশনে ॥ ৯০ ॥

যত গোপ-সুন্দরী, কৃষ্ণ তত রূপ ধরি',
সবার বস্ত্র করিলা হরণে ।
যমুনা-জল নির্মল, অঙ্গ করে ঝলমল,
সুখে কৃষ্ণ করে দরশনে ॥ ৯০ ॥

যত—जितनी; **गोप-सुन्दरी**—सुन्दर गोपियाँ; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **तत**—उतने; **रूप**—रूप; **धरि'**—स्वीकार करके; **सबार**—सबके; **वस्त्र**—वस्त्रों को; **करिला हरणे**—ले

लिया; **यमुना-जल**—यमुना का जल; **निर्मल**—निर्मल; **अङ्ग**—अंग; **करे झलमल**—झलमलाते; **सुखे**—प्रसन्नतापूर्वक; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **करे दरशने**—दर्शन किया।

अनुवाद

"जितनी गोपियाँ थीं, कृष्ण ने उतने ही रूपों में अपना विस्तार कर लिया और तब उनके पहने हुए सारे वस्त्रों को छीन लिया। यमुना नदी का जल निर्मल था, अतः कृष्ण ने अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक गोपियों के झलमलाते अंगों का दर्शन किया।

পদ্মিনী-লতা—সখী-চয়, কৈল কারো সহায়,
তরঙ্গ-হস্তে পত্র সমর্পিল ।
কেহ মুক্ত-কেশ-পাশ, আগে কৈল অধোবাস,
হস্তে কেহ কঞ্চুলি ধরিল ॥৯১॥

পদ্মিনী-লতা—সখী-চয়, কৈল কারো সহায়,
তরঙ্গ-হস্তে পত্র সমর্পিল ।
কেহ মুক্ত-কেশ-পাশ, আগে কৈল অধোবাস,
হস্তে কেহ কঞ্চুলি ধরিল ॥৯১॥

পদ্মিনী-লতা—कमल पुष्प की नाल; **सखी-चय**—गोपियों के मित्र; **कैल**—दी; **कारो**—कुछ गोपियों को; **सहाय**—सहायता; **तरङ्ग-हस्ते**—यमुना की लहरों से, जिसकी तुलना हाथों से की जाती है; **पत्र**—कमल के पत्ते; **समर्पिल**—दिये; **केह**—किसी ने; **मुक्त**—खोल दिया; **केश-पाश**—बालों को; **आगे**—सामने के; **कैल**—किया; **अधोवास**—अधोवस्त्र; **हस्ते**—हाथों से; **केह**—कुछ; **कञ्चुलि**—चोलियाँ; **धरिल**—रखा।

अनुवाद

"कमलनाल गोपियों के मित्र थे, जिन्होंने कमल की पत्तियाँ देकर उनकी सहायता की। कमलों ने यमुना की लहरों रूपी अपने हाथों से विशाल गोल पत्तियों को पानी की सतह पर फैलाकर गोपियों के शरीरों को ढक दिया। कुछ गोपियों ने अपने शरीर के अधोभागों को ढकने के लिए अपने बालों को खोलकर अपने सामने का वस्त्र बना लिया और अपने हाथों रूपी चोलियों से अपने स्तनों को ढक लिया।

কৃষ্ণের কলহ রাধা-সনে, গোপী-গণ সেই-ক্ষণে,
হেমাব্জ-বনে গেলা লুকাইতে ।
আকণ্ঠ-বপু জলে পৈশে, মুখ-মাত্র জলে ভাসে,
পদ্মে-মুখে না পারি চিনিতে ॥৯২॥

কৃষ্ণের কলহ রাধা-সনে, গোপী-গণ সেই-ক্ষণে,
হেমাব্জ-বনে গেলা লুকাইতে ।
আকণ্ঠ-বপু জলে পৈশে, মুখ-মাত্র জলে ভাসে,
পদ্মে-মুখে না পারি চিনিতে ॥ ৯২॥

কৃষ্ণের—कृष्ण का; **কলহ**—झगड़ा; **রাধা-সনে**—राधा के साथ; **গোপী-গণ**—गोपियाँ; **সেই-ক্ষণে**—उस समय; **হেম-অব্জ**—श्वेत कमल पुष्प; **বনে**—वन में; **গেলা**—गईं; **লুকাইতে**—छुपने; **আকণ্ঠ**—गले तक; **বপু**—शरीर; **জলে**—पानी में; **পৈশে**—प्रविष्ट हुईं; **মুখ-মাত্র**—केवल कमल पुष्प तथा मुख; **জলে**—जल में; **ভাসে**—तैर रहे थे; **পদ্মে-মুখে**—कमल पुष्प तथा मुखों के बीच; **না পারি**—नहीं हो रहा था; **চিনিতে**—अन्तर।

अनुवाद

"तब कृष्ण ने श्रीमती राधारानी से झगड़ना शुरू किया और सारी गोपियाँ श्वेत कमल पुष्पों के समूह में छिप गईं। उन्होंने अपने शरीरों को गले तक पानी में डुबो दिया। केवल उनके मुख ही पानी की सतह पर तैर रहे थे और ये मुख कमलों से अलग पहचाने नहीं जा रहे थे।

এথা কৃষ্ণ রাধা-সনে, কৈলা যে আছিল মনে,
গোপী-গণ অন্বেষিতে গেলা ।
তবে রাধা সূক্ষ্ম-মতি, জানিয়া সখীর স্থিতি,
সখী-মধ্যে আসিয়া মিলিলা ॥৯৩॥

এথা কৃষ্ণ রাধা-সনে, কৈলা যে আছিল মনে,
গোপী-গণ অন্বেষিতে গেলা ।
তবে রাধা সূক্ষ্ম-মতি, জানিয়া সখীর স্থিতি,
সখী-মধ্যে আসিয়া মিলিলা ॥ ৯৩॥

এথা—यहाँ; **কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण; **রাধা-সনে**—श्रीमती राधारानी के साथ; **কৈলা**—किया; **যে**—क्या; **আছিল**—था; **মনে**—मन में; **গোপী-গণ**—सारी गोपियाँ; **অন্বেষিতে**—खोजने के लिए; **গেলা**—गईं; **তবে**—उस समय; **রাধা**—श्रीमती राधारानी; **সূক্ষ্ম-মতি**—सूक्ष्म

बुद्धिवाली; **जानिया**—जानकर; **सखीर**—गोपियों की; **स्थिति**—स्थिति; **सखी-मध्ये**—सखियों के बीच; **आसिया**—आकर; **मिलिला**—मिल गईं।

अनुवाद

"अन्य गोपियों की अनुपस्थिति में भगवान् कृष्ण ने श्रीमती राधारानी के साथ स्वतन्त्र होकर इच्छानुसार व्यवहार किया। जब गोपियाँ कृष्ण की खोज करने लगीं, तो श्रीमती राधारानी, अत्यन्त सूक्ष्म बुद्धि वाली होने तथा अपनी सखियों की स्थिति जानने के कारण तुरन्त ही जाकर उनके बीच मिल गईं।

यत हेमाब्ज जले भासे, तत नीलाब्ज तार पाशे,
आसि' आसि' करये मिलन ।
नीलाब्जे हेमाब्जे ठेके, युद्ध हय प्रत्येके,
कौतुके देखे तीरे सखी-गण ॥९४॥

यत हेमाब्ज जले भासे, तत नीलाब्ज तार पाशे,
आसि' आसि' करये मिलन ।
नीलाब्जे हेमाब्जे ठेके, युद्ध हय प्रत्येके,
कौतुके देखे तीरे सखी-गण ॥९४॥

यत—जितने थे; **हेम-अब्ज**—श्वेत कमल; **जले**—जल में; **भासे**—तैर रहे थे; **तत**—उतने; **नील-अब्ज**—नीलकमल; **तार पाशे**—उनके पास; **आसि' आसि'**—आकर; **करये मिलन**—वे मिले; **नील-अब्जे**—नीलकमल; **हेम-अब्जे**—श्वेत कमलों के साथ; **ठेके**—भिड़े; **युद्ध**—युद्ध; **हय**—हुआ; **प्रति-एके**—एक-दूसरे के साथ; **कौतुके**—बड़े कौतुक के साथ; **देखे**—देखा; **तीरे**—किनारे पर; **सखी-गण**—गोपियाँ।

अनुवाद

"जल में अनेक श्वेत कमल तैर रहे थे और उतने ही नीलकमल पास आ गये। जब वे पास आये, तो श्वेत तथा नीले कमलों की भिड़न्त हुई और वे एक दूसरे से युद्ध करने लगे। गोपियाँ यमुना के किनारे से बड़े ही विनोद से यह दृश्य देख रही थीं।

चक्रवाक-मण्डल, पृथक्पृथक् युगल,
जल हैते करिल उदगम ।

উঠিল পদ্ম-মণ্ডল, পৃথক্পৃথক্ যুগল,
চক্রবাকে কৈল আচ্ছাদন ॥৯৫॥

चक्रवाक-मण्डल, पृथक्पृथक् य्रुगल,
जल हैते करिल उद्गम ।
उठिल पद्म-मण्डल, पृथक्पृथक् य्रुगल,
चक्रवाके कैल आच्छादन ॥ ९५॥

चक्रवाक-मण्डल—चक्रवाक पक्षी के मण्डल; **पृथक्-पृथक्**—अलग-अलग; **य्रुगल**—युगलों में; **जल हैते**—जल से; **करिल**—किया; **उद्गम**—प्राकट्य; **उठिल**—उठे; **पद्म-मण्डल**—कमल पुष्पों का मण्डल; **पृथक्-पृथक्**—अलग; **य्रुगल**—युगल; **चक्रवाके**—चक्रवाक पक्षी; **कैल**—किया; **आच्छादन**—ढक दिया।

अनुवाद

"जब गोपियों के उन्नत उरोज, जो कि चक्रवाक पक्षियों के गोलमटोल शरीरों के सदृश थे, जल में से पृथक्-पृथक् जोड़ों में बाहर आये, तो कृष्ण के नीलकमल सदृश हाथ उन्हें ढकने के लिए ऊपर उठ गये।

উঠিল বহু রক্তোৎপল, পৃথক্পৃথক্ যুগল,
পদ্ম-গণের কৈল নিবারণ ।
'পদ্ম' চাহে লুটি' নিতে, 'উৎপল' চাহে রাখিতে',
'চক্রবাক' লাগি' দুঁহার রণ ॥৯৬॥

उठिल बहु रक्तोत्पल, पृथक्पृथक् य्रुगल,
पद्म-गणेर कैल निवारण ।
'पद्म' चाहे लुटि' निते, 'उत्पल' चाहे राखिते',
'चक्रवाक' लागि' दुँहार रण ॥ ९६॥

उठिल—उठे; **बहु**—अनेक; **रक्त-उत्पल**—लालकमल के पुष्प; **पृथक्-पृथक्**—अलग-अलग; **य्रुगल**—युगल; **पद्म-गणेर**—नीलकमल का; **कैल**—किया; **निवारण**—निवारण; **पद्म**—नीलकमल; **चाहे**—चाहा; **लुटि'**—लूट; **निते**—लेना; **उत्पल**—लालकमल; **चाहे राखिते'**—रक्षा करना चाहा; **चक्रवाक लागि'**—चक्रवाक पक्षीओं के लिए; **दुँहार**—दोनों के बीच (लाल तथा नीले कमलों के बीच); **रण**—युद्ध।

अनुवाद

"गोपियों के हाथ, जो कि लालकमल के फूलों के समान थे, नीले फूलों को रोकने के लिए जोड़ी बनाकर जल के बाहर उठे। नीले कमलों ने श्वेत चक्रवाक पक्षियों को लूटना चाहा और लालकमलों ने उनकी रक्षा करने का प्रयास किया। इस तरह दोनों के बीच युद्ध हुआ।

पद्मोत्पल—अचेतन, चक्रवाक—सचेतन,
चक्रवाके पद्म आस्वादय ।
इहाँ दुँहार उल्टा स्थिति, धर्म हैल विपरीति,
कृष्णेर राज्ये ऐछे न्याय हय ॥ ९७॥

पद्मोत्पल—अचेतन, चक्रवाक—सचेतन,
चक्रवाके पद्म आस्वादय ।
इहाँ दुँहार उल्टा स्थिति, धर्म हैल विपरीति,
कृष्णेर राज्ये ऐछे न्याय हय ॥ ९७॥

पद्म-उत्पल—नीले तथा लाल कमल पुष्प; **अचेतन**—अचेतन; **चक्रवाक**—चक्रवाक पक्षी; **स-चेतन**—चेतन; **चक्रवाके**—चक्रवाक पक्षी; **पद्म**—नीलकमल; **आस्वादय**—आस्वाद; **इहाँ**—यहाँ; **दुँहार**—उन दोनों की; **उल्टा स्थिति**—विपरित स्थिति; **धर्म**—धर्म; **हैल**—हुआ; **विपरीति**—विपरित; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण के; **राज्ये**—राज्य में; **ऐछे**—ऐसा; **न्याय**—सिद्धान्त; **हय**—होता है।

अनुवाद

"नीले तथा लाल कमल तो अचेतन वस्तु हैं, जबकि चक्रवाक पक्षी चेतन तथा सजीव हैं। तो भी प्रेमवश नीले कमल चक्रवाकों का भोग करने लगे। यह उनके स्वाभाविक व्यवहार के विपरीत है, किन्तु कृष्ण के राज्य में ऐसे विपर्यय तो उनकी लीलाओं के नियम हैं।

तात्पर्य

सामान्यतया चक्रवाक पक्षी कमल के फूलों का आस्वादन करते हैं, किन्तु कृष्ण की लीलाओं में अचेतन कमल चक्रवाक का आस्वादन करता है।

মিত্রের মিত্র সহ-বাসী, চক্রবাকে লুটে আসি',
কৃষ্ণের রাজ্যে ঐছে ব্যবহার ।
অপরিচিত শত্রুর মিত্র, রাখে উৎপল,—এ বড় চিত্র,
এই বড় 'বিরোধ-অলঙ্কার' ॥ ৯৮ ॥

मित्रेर मित्र सह-वासी, चक्रवाके लुटे आसि',
कृष्णेर राज्ये ऐछे व्यवहार ।
अपरिचित शत्रुर मित्र, राखे उत्पल,—ए बड़ चित्र,
एइ बड़ 'विरोध-अलङ्कार' ॥ ९८ ॥

मित्रेर—सूर्यदेव के; **मित्र**—मित्र; **सह-वासी**—चक्रवाक पक्षीयों के साथ रहते हैं; **चक्रवाके**—चक्रवाक पक्षी; **लुटे**—लूटते हैं; **आसि'**—आकर; **कृष्णेर राज्ये**—कृष्ण के राज्य में; **ऐछे**—ऐसा; **व्यवहार**—आचरण; **अपरिचित**—अपरिचित; **शत्रुर मित्र**—शत्रु का मित्र; **राखे**—रक्षा करता है; **उत्पल**—लालकमल; **ए**—यह; **बड़ चित्र**—अत्यन्त अद्‌भुत; **एइ**—यह; **बड़**—महान्; **विरोध-अलङ्कार**—विरोध अलंकार।

अनुवाद

"नीलकमल सूर्यदेव के मित्र हैं और वे सभी एक साथ रहते हैं, किन्तु नीलकमल चक्रवाकों को लूटते रहते हैं। किन्तु लालकमल रात में खिलते हैं, अतएव वे चक्रवाकों के लिए अपरिचित अथवा शत्रु हैं। फिर भी कृष्ण की लीलाओं में गोपियों के कर रूप ये लालकमल उनके चक्रवाक रूपी स्तनों की रक्षा करते हैं। यह विरोध अलंकार है।"

तात्पर्य

चूँकि नीलकमल सूर्य के उदय होते ही खिलते हैं, इसलिए सूर्य उनका मित्र है। चक्रवाक पक्षी भी सूर्य के उदय होने पर दिखते हैं, अतएव चक्रवाकों तथा नीलकमलों का मेल होता है। यद्यपि नीलकमल सूर्य का मित्र है, किन्तु कृष्णलीलाओं में यह अपने मित्र चक्रवाक को लूटता है। सामान्यतया चक्रवाक निश्चल खड़े कमलों के बीच में विचरण करते हैं, किन्तु यहाँ पर कृष्ण के हाथ, जो नीलकमलों के तुल्य हैं, गोपियों के स्तनों पर आक्रमण करते हैं, जिनकी उपमा चक्रवाकों से दी गई है। यह विरोध अलंकार कहलाता है। रात्रि में लाल कमल खिलते हैं, किन्तु सूर्य के प्रकाश में ये बन्द हो जाते हैं। इसलिए लाल कमल सूर्य का शत्रु है और सूर्य के मित्र चक्रवाक को इसका पता नहीं है।

किन्तु गोपियों के स्तनों की उपमा चक्रवाकों से तथा उनके हाथों की उपमा लालकमलों से दी गई है, जो उनकी रक्षा करते हैं। यह विरोध अलंकार का अद्भुत उदाहरण है।

অতিশয়োক্তি, বিরোধাভাস, দুই অলঙ্কার প্রকাশ,
করি' কৃষ্ণ প্রকট দেখাইল ।
যাহা করি' আস্বাদন, আনন্দিত মোর মন,
নেত্র-কর্ণ-যুগ্ম জুড়াইল ॥ ৯৯॥

অতিশয়োক্তি, বিরোধাভাস, দুই অলঙ্কার প্রকাশ,
করি' কৃষ্ণ প্রকট দেখাইল ।
য়াহা করি' আস্বাদন, আনন্দিত মোর মন,
নেত্র-কর্ণ-য়ুগ্ম জুড়াইল ॥ ৯৯॥

অতিশয়-উক্তি—अतिशयोक्ति वाली भाषा; **विरोध-आभास**—विरोधाभास; **दुइ अलङ्कार**—दो अलंकार; **प्रकाश**—प्राकट्य; **करि'**—करके; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **प्रकट**—प्रकट किया; **देखाइल**—दिखाया; **य़ाहा**—जो; **करि' आस्वादन**—आस्वादन करके; **आनन्दित**—आनन्दित; **मोर मन**—मेरा मन; **नेत्र-कर्ण**—आँख तथा कान के; **य़ुग्म**—युगल; **जुड़ाइल**—सन्तुष्ट हुए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "कृष्ण ने अपनी लीलाओं में अतिशयोक्ति तथा विरोधाभास अलंकारों का प्रदर्शन किया। इनका आस्वादन करने से मेरे मन को हर्ष हुआ और इससे मेरे कान तथा नेत्र पूर्णतया तुष्ट हो गये।

ঐছে বিচিত্র ক্রীড়া করি', তীরে আইলা শ্রী-হরি,
সঙ্গে লঞা সব কান্তা-গণ ।
গন্ধ-তৈল-মর্দন, আমলকী-উদ্বর্তন,
সেবা করে তীরে সখী-গণ ॥ ১০০॥

ऐछे विचित्र क्रीड़ा करि', तीरे आइला श्री-हरि,
सङ्गे लञा सब कान्ता-गण ।

गन्ध-तैल-मर्दन, आमलकी-उद्वर्तन,
सेवा करे तीरे सखी-गण ॥ १०० ॥

ऐछे—ऐसी; **विचित्र**—अद्भुत; **क्रीड़ा**—लीलाएँ; **करि'**—करके; **तीरे**—किनारे पर; **आइला**—आये; **श्री-हरि**—भगवान् श्रीकृष्ण; **सङ्गे**—उनके साथ; **लञा**—लेकर; **सब कान्ता-गण**—सारी प्रिय गोपियाँ; **गन्ध**—सुगन्धित; **तैल**—तेल; **मर्दन**—मलकर; **आमलकी**—आमलकी फल का; **उद्वर्तन**—लेप लगाकर; **सेवा करे**—सेवा की; **तीरे**—यमुना के किनारे पर; **सखी-गण**—सारी गोपियाँ।

अनुवाद

"ऐसी अद्भुत लीलाएँ करने के बाद भगवान् श्रीकृष्ण अपनी सभी प्रिय गोपिकाओं को साथ लेकर यमुना नदी के किनारे पर आ गये। तब नदी के किनारे खड़ी गोपियों ने कृष्ण तथा अन्य गोपियों के शरीरों पर सुगन्धित तेल मलकर तथा आमलकी फल का लेप लगाकर सेवा की।

পুনরপি কৈল স্নান, শুষ্ক-বস্ত্র পরিধান,
রত্ন-মন্দিরে কৈলা আগমন ।
বৃন্দা-কৃত সম্ভার, গন্ধ-পুষ্প-অলঙ্কার,
বন্য-বেশ করিল রচন ॥ ১০১ ॥

পুনরপি কৈল স্নান, শুষ্ক-বস্ত্র পরিধান,
রত্ন-মন্দিরে কৈলা আগমন ।
বৃন্দা-কৃত সম্ভার, গন্ধ-পুষ্প-অলঙ্কার,
বন্য-বেশ করিল রচন ॥ ১০১ ॥

পুনরপি—পুনः; **কৈল**—किया; **স্নান**—स्नान; **শুষ্ক-বস্ত্র**—सूखे वस्त्र; **পরিধান**—पहनकर; **রত্ন-মন্দিরে**—रत्न-मन्दिर में; **কৈলা**—किया; **আগমন**—आगमन; **বৃন্দা-কৃত**—वृन्दा गोपी ने व्यवस्था की; **সম্ভার**—सभी प्रकार की वस्तुएँ; **গন্ধ-পুষ্প-অলঙ্কার**—सुगन्धित पुष्प तथा आभूषण; **বন্য-বেশ**—वन्य वेश; **করিল**—की; **রচন**—रचना।

अनुवाद

"तत्पश्चात् सबों ने पुनः स्नान किया और फिर सूखे वस्त्र पहनने के बाद वे छोटे से रत्न-मन्दिर में गये, जहाँ वृन्दा नामक गोपी ने उन्हें सुगन्धित फूलों, हरी पत्तियों तथा अन्य सभी प्रकार के आभूषणों से सजाकर उनकी वन्य वेशभूषा बना दी।

বৃন্দাবনে তরু-লতা, অদ্ভুত তাহার কথা,
বার-মাস ধরে ফুল-ফল ।
বৃন্দাবনে দেবী-গণ, কুঞ্জ-দাসী যত জন,
ফল পাড়ি' আনিয়া সকল ॥১০২॥

বৃন্দাবনে তরু-লতা, অদ্ভুত তাহার কথা,
বার-মাস ধরে ফুল-ফল ।
বৃন্দাবনে দেবী-গণ, কুঞ্জ-দাসী যত জন,
ফল পাড়ি' আনিয়া সকল ॥ ১০২ ॥

বৃন্দাবনে—বৃন্দাবন में; **তরু-লতা**—वृक्ष तथा लताएँ; **অদ্ভুত**—अद्भुत; **তাহার কথা**—उनकी कथा; **বার-মাস**—बारह महीने; **ধরে**—उत्पन्न करते हैं; **ফুল-ফল**—फूल तथा फल; **বৃন্দাবনে**—वृन्दावन में; **দেবী-গণ**—सारी गोपियाँ; **কুঞ্জ-দাসী**—कुंजों में दासियाँ; **যত জন**—जितनी दासियाँ; **ফল পাড়ি'**—फल तोड़कर; **আনিয়া**—लाईं; **সকল**—सभी प्रकार के।

অনুবাদ

"वृन्दावन में वृक्ष तथा लताएँ अद्भुत हैं, क्योंकि वे बारहों महीने सभी प्रकार के फल तथा फूल उत्पन्न करते हैं। वृन्दावन की कुंजों में गोपियाँ तथा दासियाँ इन फलों तथा फूलों को तोड़कर राधा तथा कृष्ण के पास ले आईं।

উত্তম সংস্কার করি', বড় বড় থালী ভরি',
রত্ন-মন্দিরে পিণ্ডার উপরে ।
ভক্ষণের ক্রম করি', ধরিয়াছে সারি সারি,
আগে আসন বসিবার তরে ॥১০৩॥

উত্তম সংস্কার করি', বড় বড় থালী ভরি',
রত্ন-মন্দিরে পিণ্ডার উপরে ।
ভক্ষণের ক্রম করি', ধরিয়াছে সারি সারি,
আগে আসন বসিবার তরে ॥ ১০৩ ॥

উত্তম—उत्तम; **সংস্কার**—सफाई; **করি'**—करके; **বড় বড়**—बड़ी; **থালী**—थालियाँ; **ভরি'**—भरकर; **রত্ন-মন্দিরে**—रत्न मन्दिर में; **পিণ্ডার উপরে**—चबूतरे पर; **ভক্ষণের ক্রম**

करि'—खाने की व्यवस्था की; **धरियाछे**—रखा; **सारि सारि**—एक के बाद एक; **आगे**—सामने; **आसन**—आसन; **वसिबार तरे**—बैठने के लिए।

अनुवाद

"गोपियों ने सारे फलों के छिलके उतार दिये और उन्हें रत्नमन्दिर के चबूतरे पर बड़ी-बड़ी थालियों में लाकर रख दिये। उन्होंने खाने के लिए फलों को पंक्तियों में सजा दिया और इसके सामने बैठने के लिए आसन बना दिया।

এক নারিকেল নানা-জাতি, এক আম্র নানা ভাতি,
কলা, কোলি—বিবিধ-প্রকার ।
পনস, খর্জুর, কমলা, নারঙ্গ, জাম, সন্তরা,
দ্রাক্ষা, বাদাম, মেওয়া যত আর ॥ ১০৪॥

एक नारिकेल नाना-जाति, एक आम्र नाना भाति,
कला, कोलि—विविध-प्रकार ।
पनस, खर्जुर, कमला, नारङ्ग, जाम, सन्तरा,
द्राक्षा, बादाम, मेओया यत आर ॥ १०४॥

एक—एक वस्तु; **नारिकेल**—नारियल; **नाना-जाति**—अनेक प्रकार के; **एक**—एक; **आम्र**—आम; **नाना भाति**—विविध प्रकार के; **कला**—केला; **कोलि**—बेर; **विविध-प्रकार**—विविध प्रकार के; **पनस**—कटहल; **खर्जुर**—खजूर; **कमला**—कमला; **नारङ्ग**—नारंगी; **जाम**—जाम; **सन्तरा**—संतरा; **द्राक्षा**—अंगूर; **बादाम**—बादाम; **मेओया**—मेवे; **यत**—जितने प्रकार के; **आर**—तथा।

अनुवाद

"फलों में नाना प्रकार के नारियल तथा आम, केले, बेर, कटहल, खजूर, कमला, नारंगी, जाम, संतरे, अंगूर, बादाम तथा सभी प्रकार के मेवे थे।

খরমুজা, ক্ষীরিকা, তাল, কেশুর, পানী-ফল, মৃণাল,
বিল্ব, পীলু, দাড়িম্বাদি যত ।
কোন দেশে কার খ্যাতি, বৃন্দাবনে সব-প্রাপ্তি,
সহস্র-জাতি, লেখা যায় কত? ॥ ১০৫॥

खरमुजा, क्षीरिका, ताल, केशुर, पानी-फल, मृणाल,
बिल्व, पीलु, दाड़िम्बादि ग्रत ।
कोन देशे कार ख्याति, वृन्दावने सब-प्राप्ति,
सहस्र-जाति, लेखा ग्राय कत? ॥ १०५ ॥

खरमुजा—खरबूजा; **क्षीरिका**—क्षीरिका; **ताल**—ताड़-फल; **केशुर**—केशूर-फल; **पानी-फल**—पानीफल; **मृणाल**—कमल के फल; **बिल्व**—बेल; **पीलु**—पीलु; **दाड़िम्ब-आदि**—अनार तथा अन्य फल; **ग्रत**—जितने प्रकार के; **कोन देशे**—कोई देश में; **कार**—जिसकी; **ख्याति**—ख्याति; **वृन्दावने**—वृन्दावन में; **सब-प्राप्ति**—सभी प्राप्य; **सहस्र-जाति**—हजारों जातियाँ; **लेखा ग्राय**—लिखना सम्भव; **कत**—कितना।

अनुवाद

"वहाँ खरबूजा, क्षीरिका, ताड़ के फल, केशुर, पानीफल, कमल के फल, बेल, पीलु, अनार तथा अन्य कई फल थे। इनमें से कुछ भिन्न-भिन्न स्थानों में विविध नामों से जाने जाते हैं, किन्तु वे सभी वृन्दावन में इतने हजार प्रकारों में सदैव उपलब्ध रहते हैं कि कोई उनका वर्णन नहीं कर सकता।

গঙ্গাজল, অমৃতকেলি, পীয়ূষগ্রন্থি, কর্পূরকেলি,
সরপূরী, অমৃতি, পদ্মচিনি ।
খণ্ড-ক্ষীরিসার-বৃক্ষ, ঘরে করি' নানা ভক্ষ্য,
রাধা যাহা কৃষ্ণ লাগি' আনি ॥ ১০৬ ॥

গঙ্গাজল, অমৃতকেলি, পীযূষগ্রন্থি, কর্পূরকেলি,
সরপূরী, অমৃতি, পদ্মচিনি ।
খণ্ড-ক্ষীরিসার-বৃক্ষ, ঘরে করি' নানা ভক্ষ্য,
রাধা গ্রাহা কৃষ্ণ লাগি' আনি ॥ ১০৬ ॥

গঙ্গা-জল—गंगाजल मिठाई; **अमृत-केलि**—अमृतकेलि (दूध की मिठाई); **पीयूष-ग्रन्थि**—पीयूषग्रंथि; **कर्पूर-केलि**—कपूरकेलि; **सर-पूरी**—सरपूरी; **अमृति**—अमृति (चावल के आटे की मिठाई); **पद्म-चिनि**—पद्मचिनि (कमल पुष्प से बनी मिठाई); **खण्ड-क्षीरि-सार-वृक्ष**—खण्डक्षीरसार (वृक्ष के आकार में मिश्री से बनी मिठाई); **घरे**—घर पर; **करि'**—बनाकर; **नाना भक्ष्य**—नाना प्रकार की खाने की वस्तुएँ; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **ग्राहा**—जो; **कृष्ण लागि'**—कृष्ण के लिए; **आनि**—लाईं।

अनुवाद

"श्रीमती राधारानी ने घर पर दूध तथा मिश्री से अनेक प्रकार की मिठाईंयाँ बनाई थीं, यथा गंगाजल, अमृतकेलि, पीयूषग्रंथि, कपूरकेलि, सरपूरी, अमृति, पद्मचिनि तथा खण्डक्षीरसार वृक्ष। तब वे इन सबों को कृष्ण के लिए ले आई थीं।

ভক্ষ্যের পরিপাটী দেখি', কৃষ্ণ হৈলা মহা-সুখী,
বসি' কৈল বন্য ভোজন ।
সঙ্গে লঞা সখী-গণ, রাধা কৈলা ভোজন,
দুঁহে কৈলা মন্দিরে শয়ন ॥ ১০৭॥

ভক্ষ্যের পরিপাটী দেখি', কৃষ্ণ হৈলা মহা-সুখী,
বসি' কৈল বন্য ভোজন ।
সঙ্গে লঞা সখী-গণ, রাধা কৈলা ভোজন,
দুঁহে কৈলা মন্দিরে শয়ন ॥ ১০৭॥

भक्ष्येर—भोजन की; **परिपाटी**—व्यवस्था; **देखि'**—देखकर; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **हैला**—हुए; **महा-सुखी**—अत्यन्त प्रसन्न; **वसि'**—बैठ गये; **कैल**—किया; **वन्य भोजन**—वन्य भोजन; **सङ्गे**—के साथ; **लञा**—लेकर; **सखी-गण**—सारी गोपियाँ; **राधा**—श्रीमती राधारानी; **कैला भोजन**—शेष बचा ग्रहण किया; **दुँहे**—उन दोनों ने; **कैला**—किया; **मन्दिरे**—रत्न-मन्दिर में; **शयन**—लेट गये।

अनुवाद

"जब कृष्ण ने भोजन की उत्तम व्यवस्था देखी, तो वे प्रसन्नतापूर्वक बैठ गये और उन्होंने वन्य भोजन किया। तब श्रीमती राधारानी तथा उनकी गोपी सखियों ने शेष बचे हुए का भोजन किया और उसके बाद कृष्ण तथा राधा उस रत्नमन्दिर में एक ही साथ लेट गये।

কেহ করে বীজন, কেহ পাদ-সম্বাহন,
কেহ করায় তাম্বূল ভক্ষণ ।
রাধা-কৃষ্ণ নিদ্রা গেলা, সখী-গণ শয়ন কৈলা,
দেখি' আমার সুখী হৈল মন ॥ ১০৮॥

केह करे वीजन, केह पाद-सम्वाहन,
केह कराय ताम्बूल भक्षण ।
राधा-कृष्ण निद्रा गेला, सखी-गण शयन कैला,
देखि' आमार सुखी हैल मन ॥ १०८ ॥

केह—कोई; **करे**—करती थी; **वीजन**—पंखा झल रही थी; **केह**—कोई; **पाद-सम्वाहन**—पाँव दबा रही थी; **केह**—कोई; **कराय**—उन्हें कराया; **ताम्बूल भक्षण**—पान खिला रही थी; **राधा-कृष्ण**—राधा और कृष्ण; **निद्रा गेला**—सो गये; **सखी-गण**—सारी गोपियाँ; **शयन कैला**—सो गईं; **देखि'**—देखकर; **आमार**—मेरा; **सुखी**—प्रसन्न; **हैल**—हुआ; **मन**—मन।

अनुवाद

"कुछ गोपियाँ राधा तथा कृष्ण पर पंखा झल रही थीं, कुछ उनके पाँव दबा रही थीं और कुछ उन्हें पान खिला रही थीं। जब राधा तथा कृष्ण सो गये, तो सारी गोपियाँ भी लेट गईं। जब मैंने यह देखा, तो मेरा मन अत्यन्त आनन्दित हुआ।

हेन-काले मोरे धरि, महा-कोलाहल करि',
तुमि-सब इहाँ लञा आइला ।
काँहा यमुना, वृन्दावन, काँहा कृष्ण, गोपी-गण,
सेइ सुख भङ्ग कराइला!'' ॥ १०९ ॥

हेन-काले मोरे धरि, महा-कोलाहल करि',
तुमि-सब इहाँ लञा आइला ।
काँहा यमुना, वृन्दावन, काँहा कृष्ण, गोपी-गण,
सेइ सुख भङ्ग कराइला!" ॥ १०९ ॥

हेन-काले—उस समय; **मोरे धरि'**—मुझे उठाकर; **महा-कोलाहल करि'**—बड़ा कोलाहल करके; **तुमि-सब**—तुम सब ने; **इहाँ**—यहाँ; **लञा आइला**—लाये; **काँहा**—कहाँ; **यमुना**—यमुना नदी; **वृन्दावन**—वृन्दावन; **काँहा**—कहाँ; **कृष्ण**—कृष्ण; **गोपी-गण**—गोपियाँ; **सेइ सुख**—वह सुख; **भङ्ग कराइला**—तुमने भंग कर दिया।

अनुवाद

"एकाएक तुम लोगों ने घोर शब्द उत्पन्न किया और मुझे उठाकर फिर से यहाँ ले आये। अब यमुना नदी कहाँ है? कहाँ है वृन्दावन? कहाँ

हैं कृष्ण तथा गोपियाँ? तुम लोगों ने तो मेरे सुखद स्वप्न को भंग कर दिया!"

এতেক কহিতে প্রভুর কেবল 'বাহ্য' হৈল ।
স্বরূপ-গোসাঞিরে দেখি' তাঁহারে পুছিল ॥ ১১০ ॥

एतेक कहिते प्रभुर केवल 'बाह्य' हैल ।
स्वरूप-गोसाञिरे देखि' ताँहारे पुछिल ॥ ११० ॥

एतेक—यह; **कहिते**—कहते हुए; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **केवल**—केवल; **बाह्य**—बाह्य चेतना; **हैल**—हुई; **स्वरूप-गोसाञिरे**—स्वरूप गोस्वामी; **देखि'**—देखकर; **ताँहारे पुछिल**—उन्होंने उनसे पूछा।

अनुवाद

इस तरह कहते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु अपनी बाह्य चेतना में पूरी तरह फिर से लौट आये। स्वरूप दामोदर गोस्वामी को देखकर महाप्रभु ने पूछा।

'ইহাঁ কেনে তোমরা আমারে লঞা আইলা?' ।
স্বরূপ-গোসাঞি তবে কহিতে লাগিলা ॥ ১১১ ॥

'इहाँ केने तोमरा आमारे लञा आइला?' ।
स्वरूप-गोसाञि तबे कहिते लागिला ॥ १११ ॥

इहाँ—यहाँ; **केने**—क्यों; **तोमरा**—तुम; **आमारे**—मुझे; **लञा आइला**—लाये हो; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **तबे**—उस समय; **कहिते लागिला**—कहने लगे।

अनुवाद

उन्होंने पूछा, "तुम मुझे यहाँ क्यों ले आये?" तब स्वरूप दामोदर ने उन्हें उत्तर दिया।

"যমুনার ভ্রমে তুমি সমুদ্রে পড়িলা ।
সমুদ্রের তরঙ্গে আসি, এত দূর আইলা। ॥ ১১২ ॥

"यमुनार भ्रमे तुमि समुद्रे पड़िला ।
समुद्रेर तरङ्गे आसि, एत दूर आइला! ॥ ११२ ॥

यमुनार भ्रमे—यमुना समझकर; **तुमि**—आप; **समुद्रे**—समुद्र में; **पड़िला**—कूद पड़े; **समुद्रेर तरङ्गे**—समुद्र की लहरों से; **आसि**—लाकर; **एत**—इतनी; **दूर**—दूरी पर; **आइला**—आप आ गये हो।

अनुवाद

"आप समुद्र को यमुना नदी समझकर उसमें कूद पड़े थे। आप समुद्र की लहरों से इतनी दूर बहाकर लाये गये हो।

एই জালিয়া জালে করি' তোমা উঠাইল ।
তোমার পরশে এই প্রেমে মত্ত হ-ইল ॥ ১১৩ ॥
एइ जालिया जाले करि' तोमा उठाइल ।
तोमार परशे एइ प्रेमे मत्त ह-इल ॥ ११३ ॥

एइ जालिया—यह मछुआरा; **जाले**—जाल में; **करि'**—पकड़कर; **तोमा**—आप; **उठाइल**—पानी से बचाया; **तोमार परशे**—आपके स्पर्श से; **एइ**—यह व्यक्ति; **प्रेमे**—प्रेमावेश में; **मत्त ह-इल**—पागल हो गया है।

अनुवाद

"इस मछुआरे ने आपको अपने जाल में पकड़ा और जल से आपको बचाया। अब वह आपका स्पर्श करने से कृष्ण के प्रेमावेश में पागल हो गया है।

সব রাত্রি সবে বেড়াই তোমারে অন্বেষিয়া ।
জালিয়ার মুখে শুনি' পাইনু আসিয়া ॥ ১১৪ ॥
सब रात्रि सबे बेड़ाइ तोमारे अन्वेषिया ।
जालियार मुखे शुनि' पाइनु आसिया ॥ ११४ ॥

सब रात्रि—सारी रात; **सबे**—हम सब; **बेड़ाइ**—चलते रहे; **तोमारे**—आपको; **अन्वेषिया**—खोजते हुए; **जालियार मुखे**—इस मछुआरे के मुख से; **शुनि'**—सुनकर; **पाइनु**—हमें मिले; **आसिया**—आकर।

अनुवाद

"हम लोग आपको रात भर खोजते रहे। इस मछुआरे से सुनकर हम यहाँ आये, तो हमें आप मिल गये।

तुमि मूर्च्छा-छले वृन्दावने देख क्रीड़ा ।
तोमार मूर्च्छा देखि' सबे मने पाइ पीड़ा ॥ ११५॥

तुमि मूर्च्छा-छले वृन्दावने देख क्रीड़ा ।
तोमार मूर्च्छा देखि' सबे मने पाइ पीड़ा ॥ ११५॥

तुमि—आप; **मूर्च्छा-छले**—अचेत जैसे; **वृन्दावने**—वृन्दावन को; **देख**—देखकर; **क्रीड़ा**—लीलाएँ; **तोमार मूर्च्छा देखि'**—आपकी मुर्छा देखकर; **सबे**—हम सब; **मने**—मन में; **पाइ**—हुए; **पीड़ा**—पीड़ित।

अनुवाद

"जब आप बाह्य रूप से अचेत थे, तभी आपने वृन्दावन में लीलाएँ देखीं, किन्तु जब हम लोगों ने आपको अचेत देखा, तो हमारे मनों में महान् पीड़ा हुई।

कृष्ण-नाम ल-इते तोमार 'अर्ध-बाह्य' ह-इल ।
ताते ये प्रलाप कैला, ताहा ये शुनिल'' ॥ ११६॥

कृष्ण-नाम ल-इते तोमार 'अर्ध-बाह्य' ह-इल ।
ताते ग्रे प्रलाप कैला, ताहा ग्रे शुनिल" ॥ ११६॥

कृष्ण-नाम ल-इते—कृष्ण के पवित्र नाम का कीर्तन; **तोमार**—आपकी; **अर्ध-बाह्य**—अर्ध चेतना; **ह-इल**—हुई; **ताते**—तत्पश्चात्; **ग्रे**—जो भी; **प्रलाप**—प्रलाप; **कैला**—आपने किया; **ताहा**—वह; **ग्रे**—जो; **शुनिल**—सुना है।

अनुवाद

"किन्तु जब हम लोगों ने कृष्ण के पवित्र नाम का उच्चारण किया, तो आपको अर्ध चेतना आई और हम आपको उन्मत्त की तरह बोलते सुनते रहे।"

প্রভু কহে,—"'স্বপ্নে দেখি' গেলাঙ বৃন্দাবনে ।
দেখি,—কৃষ্ণ রাস করেন গোপীগণ-সনে ॥ ১১৭ ॥

প্রভু কহে,—"স্বপ্নে দেখি' গেলাঙ বৃন্দাবনে ।
দেখি,—কৃষ্ণ রাস করেন গোপীগণ-সনে ॥ ১১৭ ॥

প্রভু কহে—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু ने कहा; **স্বপ্নে দেখি'**—स्वप्न देखते हुए; **গেলাঙ বৃন্দাবনে**—मैं वृन्दावन गया; **দেখি**—मैंने देखा; **কৃষ্ণ**—भगवान् कृष्ण को; **রাস করেন**—रास नृत्य करते हुए; **গোপী-গণ-সনে**—गोपियों के साथ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "मैं स्वप्न में वृन्दावन चला गया, जहाँ मैंने भगवान् कृष्ण को सारी गोपियों के साथ रास नृत्य करते देखा।

জল-ক্রীড়া করি' কৈলা বন্য-ভোজনে ।
দেখি' আমি প্রলাপ কৈলুঁ—হেন লয় মনে" ॥ ১১৮ ॥

জল-ক্রীড়া করি' কৈলা বন্য-ভোজনে ।
দেখি' আমি প্রলাপ কৈলুঁ—হেন লয় মনে" ॥ ১১৮ ॥

জল-ক্রীড়া—जलक्रीड़ा; **করি'**—करने के बाद; **কৈলা**—किया; **বন্য-ভোজনে**—वन भोजन; **দেখি'**—देखकर; **আমি**—मैं; **প্রলাপ কৈলুঁ**—प्रलाप किया; **হেন**—ऐसा; **লয়**—लिया; **মনে**—मेरे मन में।

अनुवाद

"जल में क्रीड़ा करने के बाद कृष्ण ने वन्य भोजन का आनन्द लिया। मैं समझ सकता हूँ कि इसे देखने के बाद मैंने अवश्य ही उन्मत्त की तरह बातें की होंगी।"

তবে স্বরূপ-গোসাঞি তঁরে স্নান করাঞা ।
প্রভুরে লঞা ঘর আইলা আনন্দিত হঞা ॥ ১১৯ ॥

তবে স্বরূপ-গোসাঞি তঁরে স্নান করাঞা ।
প্রভুরে লঞা ঘর আইলা আনন্দিত হঞা ॥ ১১৯ ॥

तबे—तत्पश्चात्; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **ताँरे**—उनको; **स्नान कराञा**—नहलाया; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा**—लेकर; **घर आइला**—अपने घर आये; **आनन्दित हञा**—अत्यन्त प्रसन्न होकर।

अनुवाद

तत्पश्चात् स्वरूप दामोदर गोस्वामी ने श्री चैतन्य महाप्रभु को समुद्र में नहलाया और तब वे उन्हें अत्यन्त आनन्दित भाव से घर ले आये।

এই ত' কহিলুঁ প্রভুর সমুদ্র-পতন ।
ইহা যেই শুনে, পায় চৈতন্য-চরণ ॥১২০॥

एइ त' कहिलुँ प्रभुर समुद्र-पतन ।
इहा येइ शुने, पाय चैतन्य-चरण ॥१२०॥

एइ त'—इस प्रकार; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किया है; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **समुद्र-पतन**—समुद्र में गिरने की; **इहा**—यह कथा; **येइ शुने**—जो सुनता है; **पाय**—पाता है; **चैतन्य-चरण**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल की शरण।

अनुवाद

इस तरह मैंने श्री चैतन्य महाप्रभु के समुद्र में गिरने की घटना का वर्णन किया है। जो भी इस लीला को सुनेगा, वह निश्चय ही श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों की शरण प्राप्त करेगा।

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥১২১॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥१२१॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—के चरणकमलों में; **यार**—जिसकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—चैतन्य चरितामृत ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन करते हैं; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा,

सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए उनके चरणचिह्नों पर चलकर मैं कृष्णदास श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत के अन्तर्गत महाप्रभु की समुद्र से रक्षा शीर्षक अठारहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।